पर्यावरण महाकाव्य

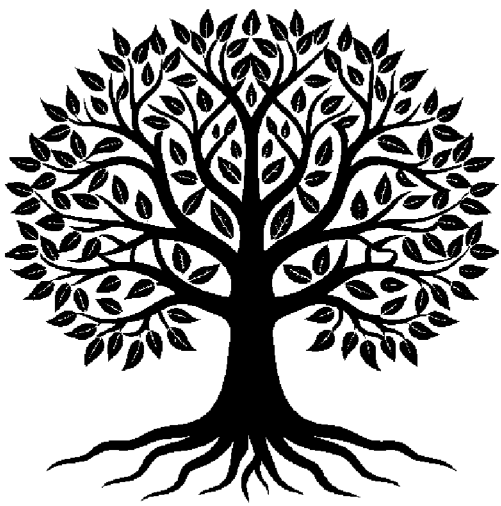

रचयिता

श्रमणाचार्य डॉ. विभवसागर मुनिराज

मंगलाचरण

सिध्दि के लिए
सदा संस्मरणीय
ओं महामंत्र
स्मरण करके
पंच ब्रह्ममय
परमात्मा को
भक्ति भाव नमन

⊡

निरावरण प्रकृति
प्रकृति निरावरण
निरावरण प्रकृति
कृति है
प्रकृति है सो संस्कृति है
सुखद स्वीकृति है
सुहानी आकृति है
प्रकृति परकृति नहीं
ईश्वरीय आकृति नहीं
इसीलिए तो प्रकृति है।

प्रकृति शील है
प्रकृति स्वभाव है
प्रकृति समीचीन कृति है
सो प्रकृति ही संस्कृति है
प्रकृति अनुकृति है
जीव की प्रकृति क्षिति रूपा
धृति स्वरूपा
श्री ह्री कीर्ति
कान्ति स्वरूपा होकर भी
अरस अरूपा है।

⊡

प्रकृति
शब्द में उपसर्ग
प्रकृति में उपसर्ग नहीं
क्योंकि उपसर्ग तो
पर के संसर्ग से होता
प्रकृति में, पर का संसर्ग ही नहीं होता
यदि समीचीन संसर्ग हो तो
पर के संसर्ग से
कृति संस्कृति बनती है
अन्यथा
कृति विकृति होती है।
यथा

दुग्ध में शर्करा
मिश्रण हो जाय तो
मधुरता आती
यह संस्कृति है,

संस्कृति की सुरक्षा
हमारा कर्त्तव्य है।
समझो !

एक बार नहीं,
अनेक बार समझो
समझना ही सम्हलना है
सम्हलना ही सफलता है।

दुग्ध प्रकृति है
शर्करा योग किया
यह संस्कृति है

दुग्ध में दुग्ध मिलाना स्वीकृति है।
किन्तु
दूध में पानी मिलाना
निकृति है

माया है, छल है, कपट है
यह मिलना मिलाना नहीं, मिलावट है।
जो प्रगति में रुकावट है।
सो ऐसी रुकावट के लिए खेद है।

उचित समय पर
उचित कार्य न करना भी
कृति को विकृति बनाना है,
दूध को यदि तपाया न जाये तो
दूध फट जाता है
क्यों ?

क्योंकि
उसमें विकृत तत्त्व प्रकट आता है
यह और कोई नहीं लाता
यह मानवीय प्रमाद
अज्ञान, आलस्य, अविवेक का फल है
कि दूध फट जाता है।

दूध माँ के स्तन में
नहीं फटता
वर्तन में फटता है
समझो विकृति संसर्ग से आती है
लो दूध फटाना ही है,

तो फटा दो, स्वभाव से हटा दो
खटाई योग चाहिए।
नीबू रस की सिर्फ दो बूँद मिला दो
दूध फट जायेगा
स्वभाव से हट जायेगा

स्वभाव से हटना ही तो
विकृति है।
प्रकृति को
प्रकृति रहने दो
यह पूजा है, उपासना है
पर्युपासना है

प्रकृति ने अपनी रक्षा
सुरक्षा के लिए
अपने चारों ओर/सभी ओर
जो घेरा, आवरण रखा है
वह प्राकृतिक आवरण ही
पर्यावरण है।

प्रकृति की रक्षा के लिए
प्राकृतिक / नैसर्गिक
आवरण ही पर्यावरण है!

⊡

प्रकृति माँ स्वरूपा है,

वह उचित मात्रा में
उचित समय पर
अवश्य देती है
यही तो उसका
मातृधर्म मातृत्व है।
हाँ ! जी ! हाँ
शिशु को दूध पिलाना
माँ का मातृत्व है
दूधपान करना शिशु धर्म है
किन्तु स्तन में दूध न हो तो
स्तन दश लेना/काट लेना अधर्म है।
यही नियम प्रकृति के साथ समझना ।
उचित अवसर पर
उचित मात्रा
उचित तरीके से
प्राप्त करना
प्रकृति माँ का उपहार है

⊡

अनुचित अवसर
अनुचित मात्रा
अनुचित तरीका अपनाना
प्रकृति माँ का संहार है।
उपहार पाना
अहिंसा है।
संहार करना
हिंसा है।

⊡

प्रकृति की रक्षा

प्रकृति की रक्षा
पर्यावरण की रक्षा
प्राणी मात्र के
अस्तित्व की सुरक्षा है
यह कत्तर्व्य वन विभाग का नहीं
हमारे सौभाग्य का है
दिल - दिमाग का है।
रक्षा करना सौभाग्य है।

प्रकृति की रक्षा करना
रक्षाबन्धन त्यौहार है।
प्रकृति की रक्षा के लिए
संकल्प का सूत्र बाँधिये
रक्षाबन्धन मनाइए
हरियाली रहेगी
तो खुशहाली रहेगी।
खुशहाली है तो दीवाली है
अन्यथा दिवालिया है।

⊡

पर्यावरण शरण है

आश्रय दाता
रक्षाकर्ता
जीवन दाता
जीवन रक्षक
जननी प्रकृति माँ है
माँ नहीं तो अमा/अंधेरा
माँ है तो पूर्णिमा/उजियारा
क्या चाहिए ?
माँ
तो प्रकृति की रक्षा
माँ की सेवा है।

⊡

कवि परिचय

मैं
निर्ग्रंथ श्रमण वनवासी!
मैं हूँ सन्त
सकल संन्यासी!!
प्रकृति पुरुष मैं निरावरण हूँ।
विश्व हितैषी - सदाचरण हूँ।।

⊡

मैं ही पर्यावरण पुरुष हूँ।
ज्ञान-दरशमय अरस अरुस हूँ।।
महाव्रती हूँ, महापुरुष हूँ।
महाकवि मैं, काव्य पुरुष हूँ।।

⊡

कवि उद्येश्य

मैं पर्यावरण सुरक्षा चाहूँ,
सब जीवों की रक्षा चाहूँ।।
सभी परस्पर जियें प्रेम हो,
अखिल विश्व में कुशल क्षेम हो,
सबके हित में - मेरा हित है,
सबके सुख में मेरा सुख है।
सबका हित ही मेरा व्रत है
पर का हित–मेरा अमृत है।।

⊡

जिन सरस्वती वंदना

पर की पीड़ा मेरी पीड़ा
मुझे बताती यह माँ वीणा।
वीणा वाणी इतना वर दे,
पर की पीड़ा पल में हर दे।।

ऐसी कोई तान छेड़ दे,
मन्द मधुर मुस्कान छेड़ दे।
शंखनंद कर प्राण फूँक दे।
कोकिलकण्ठी मुझे कूँक दे
सरस्वती माँ मुझको स्वर दे।
वरदायी माँ मुझको वर दे।

करो अनुग्रह मुझ पर माता ।
कलम हमारी दे सुख दाता।।
जिनवाणी माँ सार हमें दे।
कलह नहीं उद्धार हमें दे
विश्व शान्ति के लिए जिऊँ मैं,
मन वीणा की तार हमें दे।।

मैं कोयल सा कुहुक रहा हूँ।
मैं चिड़िया सा चहक रहा हूं।
मैं चन्दन सा महक रहा हूँ!
आग नहीं पर दमक रहा हूँ।।
मैं कुन्दन सा दमक रहा हूँ,
मैं चन्दा सा चमक रहा हूँ!
सारस्वत कवि परम्परा का,
भक्ति - भाव से गमक रहा हूँ।।

देश की रक्षा कौन करेगा ?
हम करेंगे - हम करेंगे।
धर्म की रक्षा कौन करेगा?
हम करेंगे हम करेंगे।
पर्यावरण की रक्षा
देश, धर्म, संस्कृति, समाज
की सुरक्षा है।
पर्यावरण बिना
न तो देश
न धर्म
न संस्कृति
न समाज है
पर्यावरण का ह्रास
देश, धर्म, संस्कृति, समाज का ह्रास है।

⊡

महाकाव्य परिचय

महाकवि का महाभाव ही
महाकाव्य कहलाता है।
आप्त निबन्धन श्रुत समूह का
वस्तु स्वरूप दिखाता है
महापुरुष का महाचरित
महाकवि दर्शाता है
इसलिए तो महाकवि वह
जग में पूजा पाता है।

⊡

यह महान संदेश सुनाता,
यह महानता दाता है।।
यह महान चिंतन का द्योतक,
प्रकृति रहस्य प्रकटाता है।
महान करुणा रस छलकाता,
दया भाव उपजाता है।
मेरा पर्यावरण काव्य यह,
महाकाव्य कहलाता है।।

⊡

चिपको आन्दोलन

प्रकृति माँ ने दिया है जीवन
प्रकृति माँ को हम दे जीवन !
जंगल की रक्षा करना ही
अपना मंगल करना है।
जंगल की रक्षा के खातिर
जीवन अर्पित करना है।।
यदि स्वार्थ के खातिर कोई
वन या जंगल काटेगा ।
वह भारत की अखण्डता को
खण्ड - खण्ड में बाटेगा।
प्रकृर्ति माँ का कोई बेटा
ललकारेगा - डाटेगा।।
फिर, भी जो सत्ता के मद में
अपनी - अपनी छाँटेगा।
तो उन्नीस सौ तेहत्तर का,
हम इतिहास का पढ़ायेगे।
और उत्तराखण्ड का गौरव,
दुनिया को बतलायेंगे।

गाँव चमोली की वह घटना,
समझो नहीं पुरानी है।
जब-जब पर्यावरण पढ़ोगे,
उसकी अमिट कहानी है।
सुन्दर लाल बहुगुणा सरीखा
भारत माँ का लाल कहीं
जाग उठेगा आन्दोलन को
भड़क उठे विद्रोह कहीं
पर्यावरण शहीद पुरुष की,
क्या गणना गिन पाओगे ।
"मस्तक काटो, पेड़ न काटा"
नारा क्या सुन पाओगे।
तीन सौ त्रेसठ माँ के बेटे
प्रकृति माँ की रक्षा को
हुए शहीद पर अमर रहेंगे।
पर्यावरण सुरक्षा को ।
भारत की सरकार सबक ले,
इस चिपको आन्दोलन से
पर्यावरण के लिए हुए जो
उन अगणित बलिदानों से ।

⊡

जीवन सुरक्षा चक्र

जीवन रक्षा चक्रब्यूह, यह
सदा हमारा साथी है।
उसे तोड़ना, उसे छेड़ना
अपनी ही बरवादी है।
पर्यावरण प्रदूषित करना,
जीवन दूषित करना है।
पर्यावरण सुरक्षित रखना,
जीवन भूषित करना है।

⊡

सफलता

द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव
का ज्ञान होना
तद्नुरूप
विवेक अनुरूप
काम करना
सफलता की साधना
समता आराधना है
पर्यावरण को
क्षति पहुँचाना
अनर्थदण्ड है
अपराध है
दोष है
पाप है
वरदान नहीं
अभिशाप है।

⊡

जीवदया

पर्यावरण को
सुरक्षा देना
सुरक्षित रहने का
विधान है।
भारतीय संविधान है,
यह जीव दया गुण
गुणों का निधान है
समस्या का समाधान है।

⊡

पर्यावरण के लाभ

अनादि – अनिधन
लोक रचना
विश्व संरचना में
पर्यावरण समाया है
पर्यावरण से जिस जिसने,
नाता नित्य निभाया
उसने स्वस्थ वन
स्वस्थ वतन
स्वस्थ तन
स्वस्थ धन
स्वस्थ मन
स्वस्थ वसन
स्वस्थ चिंतन
और स्वस्थ
चेतन पाया।

⊡

पर्यावरण के अंग

नदियाँ, झरनें
पर्वत, वन
सभी पर्यावरण के अंग
हमारे जीवन के अंग हैं
किसी एक का
घटना/मिटना
विघटना अपंगता है
विकलांगता है
सर्वांग सम्पूर्णता ही
दिव्यांगता भव्यांगता है।

⊡

पर्यावरण जीवन आधार

पर्यावरण प्रकृति का रक्षा कवच है
पर्यावरण संस्कृति का सुरक्षा चक्र है।
पर्यावरण विकृति के लिए वज्रास्त्र है।
पर्यावरण निकृति मिटाने ब्रह्मास्त्र है
पर्यावरण प्रकृति रक्षा का अमोघास्त्र है।
प्राणी का जीवन पर्यावरण पर आधारित है।
पर्यावरण जीवन का आधार है।
समझो ! आधार के बिना
आधेय कहाँ पाओग?
पात्र के बिना वस्तु
कहाँ रख पाओगे?
आधार – आधेय सम्बन्ध को
संस्कृत भाषा में आचार्यों ने
अधिकरण कारक कहा
आधार प्रकाशन को
अधिकरण कहते हैं
बीज के वपन में भूमि आधार है
जन्म के ग्रहण में
योनि आधार है

आधार–आधेय
सम्बन्ध है।
आधार मिटा तो
आधेय मिट जाता
आधार हटा तो
आधेय हट जाता
सुनो! आधार होगा – आधेय होगा
वन है तो वन्य जीव अरे
जंगल होंगे हरे–भरे।
वन के बिन वनराज कहाँ ?
धन के बिन धनराज कहाँ ।
वन है तो वनवासी हैं
वन है तो संन्यासी है
हिन्दी भाषा में वन
संस्कृत में वनम् कहा
कर्ता हो या कर्म कारक
शब्द एक आया
जो वन गये
सो बन गये।
राम वन गये,
सो राम बन गये !
वन बचाओगे
तभी बन जा पाओगे,
जब वन जा पाओगे
तभी भगवन बन पाओगे ।

⊡

पर्यावरण संरक्षण

मर्यादा का पाठ सिखाया,
मर्यादा पुरुषोत्तम ने ।
मर्यादा का पाठ सिखाया,
लोकपुरुष लोकोत्तम ने ।
बिना प्रयोजन ।
तृण का छेदन/भेदन
उत्तापन/संत्तापन और ग्रहण भी
पर्यावरण पर ग्रहण है।
हिंसा है, आक्रमण है।
जानते
सूर्यग्रहण/चन्द्रग्रहण तो
माहमें एक बार लगता है
पर्यावरण ग्रहण प्रतिपल लगता
पर्यावरण संरक्षण
संवर्द्धन में
मेरा क्या योगदान है?
पर्यावरण में आना योग है।
पर्यावरण में जीना दान है।

⊡

जीवंत पर्यावरण

कल्पवृक्ष ?
जीवंत पर्यावरण है
परोपकार में निहित
अंनत पर्यावरण है।
जाति-जाति के
भाँति-भाँति के
कल्पवृक्ष
पुण्य वृक्ष से खड़े पर्यावरण है।
जीवन हो या मरण
दोंनों में उपयोगी है पर्यावरण है।

⊡

समवशरण में पर्यावरण –

तीर्थंकर की धर्म सभा
जहाँ बैठकर भव्य जीव
आत्म कल्याण के
सम्यक् अवसर
की प्रतीक्षारत है
वह समवशरण है।

खातिका, लता, उद्यान
वापी का होना
पर्यावरण होना
एनर्जी पावर
ऊर्जा शक्ति
विस्तारक
महामन्त्र है पर्यावरण
तीर्थंकर के पद चिन्हों में
पर्यावरण के चिन्ह है
पद में अलंकार, आभूषण नहीं
पशु – पक्षियों

जलचर, थलचर
नभचर
जीवों के चिन्ह हैं।
जैविक/ अजैविक
चेतन/ अचेतन
भौतिक/ अभौतिक
लौकिक/ अलौकिक
दोनों प्रकार पर्यावरण हैं।

⊡

पर्यावरण और अनेकान्त

वस्तु अनेक धर्मात्मक है।
प्रत्येक वस्तु में
अनंत शक्तियाँ
अनंत गुण
अनंत स्वभाव
विद्यमान होते हैं।
यह अनेकान्त है
वस्तु सिद्धान्त है।
वे गुण,
स्वभाव,
शक्तियाँ,
धर्म
परस्पर में एक - दूसरे
के लिए सहयोगी
धर्म निभाते हैं
अतः वे पर्यावरण में आते हैं।
किसी वस्तु के गुण धर्म जाने बिना
उसे अनावश्यक, अनुपयोगी

नहीं ठहरा सकते ।
हो सकता
जो हमारी प्रज्ञा, बुध्दि में
अनुपयोगी हो
वह अन्य किसी के लिए उपयोगी हो
गाय का गोबर
गाय के लिए अनुपयोगी
लेकिन हमारे लिए उपयोगी है।
यह समझना बहुत उपयोगी है।

⊡

सर्वत्र पर्यावरण

जल में, थल में
नभ में
अवनि में, अंबर में
आकाश में, समुंदर में
सर्वत्र पर्यावरण समाया है।
प्रकृति ने अपना
रक्षा कवच स्वयं बनाया
दृश्य - अदृश्य तत्त्वों से मिलकर
अनेक जीवों/पुद्गल अणुस्कंधों से
मिलकर
पर्यावरण रचाया

⊡

हमारा पर्यावरण आनंद

अच्छे पर्यावरण में
सुखद वातावरण
वास करता है।
सुखद वातावरण में
सदाचरण प्रकाश भरता है।
मानव कृत
समुद्री यात्रायें,
पर्वतीय आरोहण
वन विहार
ये सब प्राकृतिक आनंद के उत्स हैं।

पर्यावरण और अहिंसा

पर्यावरण के चरण हैं।
षट्काय जीव न हनन ते,
सब विधि दरव हिंसा टरी।
रागदि भाव निवारते,
हिंसा न भावित अब तरी ।।

प्रकृति संरक्षण
वन्य जीव संरक्षण
सर्व जीव रक्षण के लिए
दयामूर्ति हो जाना
पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु,
वनस्पति
किसी एक का भी हनन
पर्यावरण का हनन है। हिंसा है।
अतः किसी का हनन नहीं।
ज्ञात/अज्ञात में

प्रमाद से आत्मा में
इन जीवों को बाधा हुई हो
तो–
हे पृथ्वी तू क्षमा दान दे,
हे जल क्षमा करो,
अग्नि वायु तो क्षमा दान दे,
हे तृण क्षमा करो ।।
तरुववर! गुरुवर!क्षमादान दो,
अब सन्तोष धरो
प्रतिक्रमण करता हूँ भगवन् !
मेरे दोष हरो।।

अपना अपराध
स्वीकार कर
भविष्य में पुनः न करने के लिए
संकल्पित, समर्पित
चेतना
प्रतिक्रमण कर दोष मुक्त होता है।
अहिंसा व्रत युक्त होता है।
सन्मतिदाता, भाग्य विद्याता
सन्मति नंदन, नमन–नमन।।

⊡

भोग भूमि में पर्यावरण –

भोग भूमि
जहाँ जीव जन्म लेकर
पूर्व जन्म के पुण्योदय से
बिना श्रम किए
बिना कर्म किए
अपने जीवन उपयोगी
सुविधाओं को पाता है
वह भोग भूमि है
भोग भूमि में
कल्पवृक्ष होते हैं।
जो विविध प्रकार के
नाम वाले
नामानुसार काम वाले
संज्ञानुसार गुण वाले
प्रयोजन साधने वाले
कल्पना करो, याचना नहीं ।
पुण्यात्मा को याचना नहीं,
वाचना करना होता ।
पुण्यात्मा विचार रखता है
भावना करता है

पुण्यानुरूप फल मिलते हैं।
हाँ ! जी! हाँ
कल्पवृक्ष
साधन देते, साधना नहीं।
सुविधा देते, संयम नहीं ।
वस्त्र देते, शास्त्र नहीं।
रत्न देते, रत्नत्रय नहीं।
देखिए क्रमशः
पानांग कल्पतरु
पेय पदार्थ प्रदाता
पानक दाता है
पान देते, ज्ञान नहीं।
क्योंकि ज्ञान सद्गुरु से मिलता
कल्पतरु से नहीं।
इसीलिए भारतीय संस्कृति में
सुर और सुरगुरु
तरु और कल्पतरु
से सर्वोच्च स्थान गुरु का है।
गुरु से हम वह पा सकते
जो कल्पतरु से नहीं
कल्पवृक्ष भोग भूमि में होते हैं।
भोग सामग्री देते हैं
गुरु कर्मभूमि में होते हैं
कर्म काटने की सामग्री देते हैं
अवश्य ही गुरु का महत्त्व
कल्पतरु से श्रेष्ठ है।

पानांग - पेय पदार्थ, पानक दाता
तूर्यांग - दिव्य घोष, वाद्ययन्त्र, संगीत
सामग्री दाता
भूषणांग - आभूषण, अलंकार प्रदाता
वस्त्रांग - वस्त्र, परिधान प्रदाता
भोजनांग - क्षुधा प्रतिकार हेतु भोजन
सामग्री दाता
भवनांग भवन, रहने को स्थान, महल
मकान दाता
दीपांग- प्रकाशक पदार्थ दाता
भाजनांग - वर्तन प्रदाता
मालांग- माला प्रदाता
तेजांग -तेज, कान्ति कारक आग प्रदाता
असंयमी जीव पुण्य साधन
जुटा सकते, साधना नहीं
भोग भूमि के जीव
भाग्यानुरूप
सुख - सुविधायें पाते,
एक, दो, तीन पल्य का
जीवन काल
भाग्य के भरोसे
सुखाभास में
व्यतीत होता है
न माता, न पिता, न परिवार होता
पर्यावरण सदा साथ देता।।

प्राकृतिक उपहार

प्रकृति की गोद में
जीवनदायिनी
सब सामग्री
जिसका जितना पुण्य हो
वह उतना पाले
दस प्रकार के कल्पवृक्ष
वानस्पतिक नहीं
पृथ्वीकायिक नहीं
पृथ्वीकाय हैं।
जो देने का ज्ञान भी नहीं रखते
वे देंगे क्या?
दैविक भी नहीं
जैविक भी नहीं
अतः देते नहीं
न देने का पुण्य पाते
न दान दाता कहलाते
हैं भण्डार गृह की तरह

सबको सब सामान नहीं देते।
सबको समान नहीं देते
निज - निज पुण्यानुरूप
जीव पा लेते खजाना हैं।

ध्रौव्य कोश है
कल्पवृक्ष है - खुला भण्डार
पाओगे - प्रज्ञा अनुसार
जैसा जिसमें जगे विचार
भाव कल्पना का संचार
वह पाये पुण्यानुसार
पर्यावरण का एक प्रकार
प्रकृति माँ के अनेक उपहार ।

⊡

प्राकृतिक छटा

प्रकृति रूप
वस्तु स्वरुप
निर्दोष होने से
निरम्बर होने पर भी
मनोहर होता है।
अविकार होने से
उसका सर्वदा, सभी ओर
सत्कार होता है
क्योंकि वह गुणों का आधार होता है।
अतः उसे भक्ति भाव से सादर नमस्कार
होता है।
''वन्दे तद्गुण लब्धये ''
की भावना से

प्रकृति के सरोवर में
क्षमा की लहरें उठतीं
जीवदया के फूल खिलते हैं
प्रकृतिस्थ पुरुष का

जीवन दलदल नहीं
शतदल होता है,
शीतल होता है

जीवन में शील होता है
स्वंय सुगन्धित होता
जग को सुगंध देता है।
प्रकृतिस्थ जीवों के
नयनों में लालिमा नहीं
मन में कालिमा नहीं
यह कृति नहीं प्रकृति है।

⊡

पर्यावरण समर्पण

तेरी बगिया का पौधा मैं,
हर फूल तुम्हें ही अर्पित है।
भावों की कलियाँ अर्पित हैं,
सुमनों की गंध समर्पित हैं।
पौधा की जीवन रेखा ये,
बगियाँ की जीवन रेखा है।
जिसने पौधा को सींचा है,
उसने बगिया को देखा है।

⊡

प्रकृति दर्शन

हे प्रकृति !
जब तू मुस्कराती
समग्र सृष्टि
हरषाती
तेरी एक मुस्कान
सबका मन हरषाती
हे प्रकृति
तेरी मुस्कराती छवि पाने
प्रकृति के हम दीवाने
कभी आते पचमढ़ी में
कभी आते हैं शिखरजी
भूल जाते अपनी दूरी
पहुँच जाते हैं मन्सूरी ?

गिरी हिमालय पर हिमानी
देवगंगा, सुधापानी
रूप नाना जहाँ दिखते
ऊष्ण पानी, शीत पानी

क्या रजत से हो रहा
श्रृंगार हिमगिरि का जहाँ
दूध गंगा सी वहाँ
बह रही है क्षीरधारा

प्राकृतिक शिक्षाएँ

प्रकृति विरुद्ध न भोजन हो,
प्रकृति विरुद्ध न जीवन हो
प्रकृति विरुद्ध न दिनचर्या
प्रकृति विरुद्ध न हो क्रिया।
प्रकृति विरुद्ध न भाषण हो
प्रकृति विरुद्ध न आकर्षण
प्रकृति विरुद्ध न गमन कहीं
प्रकृति विरुद्ध आगमन नहीं

प्रकृति पर्व

यह प्रकृति पर्व हरियाली है।
यह प्रकृति पर्व दीवाली है
यह प्रकृति पर्व रक्षाबन्धन
यह प्रकृति पर्व है पर्युषण।।
यह प्रकृति तीज त्यौहार सभी
यह प्रकृति श्रेष्ठ व्यवहार सभी
यह प्रकृति विचारों की जननी
यह प्रकृति जीव- रक्षा करनी
यह प्रकृति ! संयता साध्वी सी
यह प्रकृति ! सरस्वती भारती सी
यह प्रकृति ! क्षेम मंगलकारक
यह प्रकृति प्रेम कौशलधारक

⊡

जो प्रकृति परम पावन,
पूज्यता को प्राप्त है।
जो प्रकृति स्वर्ग से भी
श्रेष्ठता को प्राप्त है
देवता आते धरा पर,

देवियों के साथ हैं
तीर्थंकरों की पद रजों में
झुका करते माथ हैं।

⊡

प्राकृतिक संतुलन एवं स्वास्थ्य

प्रकृति का संतुलन हो तो
वात, पित्त, कफ तीनों
नाड़ी सही अनुपात में चलती है,
तीनों नाड़ी का उचित अनुपात
में चलना ही तो स्वस्थता की निशानी है
नाड़ी का रुक-रुक कर चलना तो
प्राण शीघ्र ही जाने का निशानी है।
अतः
प्रकृति का संतुलन
बनाने के लिए
ये कर्तव्य निभाना होगा।
पर्यावरण बचाना होगा।

⊡

प्राकृतिक आनंद

मैं पदार्थ की
मूल प्रकृति (स्वभाव)
को देखकर जानकर
वस्तु स्वरूप
सम्यग्ज्ञान को पाकर
आह्लाद पाता
निजानंद आता।
सच है,
ज्ञान मन को
आनंद देता।

⊡

प्रकृति सत्कार

प्रकृति
वस्तु का मूलरूप है।
विकृति
व्यक्ति का भूलरूप है।
प्रकृति
सद्‌रूप है। स्वरूप है।
विकृति
विरूप है।
प्रकृति
अविकार है
विकृति विकार है
प्रकृति स्वीकार है,
विकृति धिक्‌कार है।
प्रकृति सत्करणीय
विकृति तिरस्करणीय है।

⊡

प्रकृतिकार नहीं

कृति होती
कृतिकार होता
किन्तु
प्रकृति होती
प्रकृतिकार नहीं होता
अतः सिद्ध हुआ
प्रकृति अनादि-अनंत
अकृत्रिम स्वयं है
मूल सरंचना
प्रकृति निसर्ग है
उपसर्ग नहीं
तो प्रकृति पर उपसर्ग क्यों ?
प्रकृति मूल है
विकृति भूल है
मिटाने योग्य क्या?
प्रकृति
अथवा विकृति
विकृति, भूल मिटाने योग्य है

प्रकृति मूल टिकाने योग्य है
प्रकृति निरावरण है
विकृति सावरण है
प्रकृति पूजी जाती, पूज्यता पाती है
विकृति हटायी जाती है
घटायी जाती, मिटायी जाती
प्रकृति प्रकटायी जाती है।

⊡

प्रकृति संरचना

प्रकृति!
किसकी कृति तू?
मैं किसी की कृति,
अनुकृति
आकृति
उत्कृति
स्वीकृति नहीं हूँ
मैं सहज स्वाभाविक
नैसर्गिक, निसर्ग संरचना
लोकमंगल रचना प्रकृति हूँ।

⊡

प्रकृति किसके लिए?

यदि मैं किसी व्यक्ति/वर्ग/जाति/समाज
विशेष की लिए कृति होती।
तो किसी विशेष के सत्कार के लिए होती
किंतु मैं– मैं किसी की नहीं
पर मेरे तो सबके लिए हूँ।
न तो मैं अनुबंधिता हूँ
न प्रतिबंधिता हूँ
न संबंधिता हूँ
मैं तो सदा सर्वत्र
अबंधिता है।
सदाकाल वंदिता हूँ।

⊡

प्रकृति और स्वास्थ्य

स्वस्थ रहना
मानव शरीर की प्रकृति है।
अस्वस्थ रहना
शरीर की विकृति है।
प्रकृति का संतुलन बिगड़ना
विकृति है। अस्वस्थता है।
बिगड़े हुए संतुलन को संभालना
स्वस्थता है।
मानव जब-जब प्रकृति को भूला
विकृति की ओर गया,
तब - तब मानव ने
अपना प्राकृतिक/स्वाभाविक/नैसर्गिक
सौन्दर्य खोया
आत्म सुख खोया
आत्म सम्मान खोया, रोया,
बहुत बार रोया, तब करुणाधारी गुरु ने
वीतरागी प्रभु ने - संदेश दिया-
प्रकृति में जिओ, प्रकृति में जीने दो
जिओ और जीने दो।

⊡

प्रकृति

मैं किसी की कृति नहीं
सबके लिए कृतिका हूँ।
सत्य शाश्वत ऋतिका हूँ।
मैं मृति नहीं स्मृतिका हूँ।
मैं प्रकृति हूँ, प्राकृतिका हूँ।

मैं ही ऋतिका, ऋतम्भरा
मैं ही वसुधा, वसुन्धरा
मैं ही क्षमा, क्षोणी, क्षिति हूँ।
मैं सनातन धृति प्रकृति हूँ।

जीव प्रकृति जैविक पर्यावरण
जीव की प्रकृति तत्त्व तो है
पर अचेतन नहीं
चेतन तत्त्व है
ज्ञानवान तत्त्व है
अनुभवमान्, धीमान् तत्त्व है
सो प्रकृति जीव तत्त्व है।

प्रकृति एक, रूप अनेक
पृथिवी, जल, अग्नि, वायु
वनस्पिति
सभी स्पर्शन इन्द्रिय वाले जीव हैं।
प्रकृति के प्रत्येक पदार्थ पर
समीचीन दृष्टि
यथार्थ श्रध्दा रखना सम्यग्दर्शन है।
तत्त्वार्थ का समीचीन ज्ञान सम्यग्ज्ञान है।
प्रकृति को हानि न पहुँचाना
स्वभाव में रहना
सम्यक् चारित्र है

⊡

प्राकृतिक उपचार

चिकित्सा के क्षेत्र में
प्रकृति ने मातृवत्
उपकार की भूमिका निभायी।
विकृति बाहर से आयी
विकृति ने पीड़ा पहुँचायी
विकृति ने रोग दिया
प्रकृति ने आरोग्य दिया।
विकृति ने बीमार बनाया
निर्बल बनाया ।
प्रकृति ने उपचार किया
उपकार किया,
स्वस्थ बनाया,
इसलिए चिकित्सा
जल, मिट्टि, अग्नि, पवन
आकाश किसी भी तत्त्व से हो
सभी प्रकृति के अंग
चिकित्सा प्रकृति का अंग
होने से प्राकृतिक कहाती है।

प्रकृति
वस्तु है सो वास्तविक है।
सत् है, सो शाश्वत है।
उत्पाद, व्यय, सहित ध्रौव्य ही
सत् होता
प्रकृति नित्य भी सत्तावान होता
अनित्य भी है।
नित्य रहित अनित्य अवस्तु है।
अनित्य रहित नित्य अवस्तु है
भव्य भी, सम्यग्दर्शन के विना,
अभव्य सा कहाता है
इसीलिए तो भव्यत्व भाव
को अनादि होकर भी सादि
कहा जाता है
क्योंकि सम्यक्त्व विना संसार
अनंत संज्ञा पाता है
सम्यक्त्व हो जाने पर
संसार मात्र उपार्ध
पुद्गल परावर्तन शेष रह
जाता/मिथ्यात्व विकृति है
सम्यक्त्व प्रकृति है।
प्रकृति
किसी की कृति नहीं

अनुकृति नहीं, स्वीकृति नहीं है
निसर्ग प्रकृष्ट रचना स्वाभाविक संरचना
प्रकृति है।
प्रकृति यदि किसी व्यक्ति, वर्ग विशेष
अथवा
जाति की कृति होती तो
विशेष के लिए होती
एक के लिए अनुबंधित होती
अन्य के लिए प्रतिबंधित होती है
किन्तु प्रकृति कहती
मैं कालजयी कृति, प्रकृति प्राकृतिक हूँ
मैं मृति नहीं
मृतिका नहीं, प्रकृति हूँ, प्राकृतिका हूँ।

⊡

वन्य प्राणी एवं स्वास्थ्य

मानव जगत की तुलना
वन्य प्राणियों से करें
तो वन्य प्राणीगण
आपेक्षिक अधिक स्वस्थ, पाये जाते हैं।
प्रकृति अपना संतुलन स्वयं बनाती है।
प्रकृति को असंतुलन स्वीकार नहीं।
समुद्र ने पानी चाहा
सरिताओं ने पानी दिया
किन्तु पानी के साथ जो विकृति पहुँची।
समुद्र ने अपनी लहरों से
विकृति को दूर कर
किनारे ला दिया।
समुद्र स्वच्छ है, स्वस्थ है।
स्वस्थ है, सो स्वच्छ है।
स्वच्छ है, सो स्वस्थ है।

प्राकृतिक जीवन

विकृति–आयी
आँख में लालिमा छायी
पीड़ा पहुँचाई, आँख न सह पायी
आँख के पानी ने
बाहर बहाई
प्रकृति में रहो।
प्रकृति में जिओ,
प्रकृति में जीने दो।

⊡

तरुछाया

बेटा!
वृक्ष के हिलते हुए पत्ते,
झूलती हुई डालियाँ
नर्तन करती लतायें
सभी वृक्ष की शोभा बढ़ाती ।
पथिकों को शीतल समीर देकर
पीर हर लेती,छाया भी सहारा देती
तपन हर लेती!
छाया चाहे तरुवर की हो या
गुरुवर की
जीवन में बहुत जरूरी है।
इसीलिए तो कहते-
तेरी छत्रच्छाया भगवन्
मेरी शिर पर हो।।

⊡

माधुर्य गुण प्रीति

सदाबहार वन
सदावहार बन ।
का संदेश देते।
सदावहार वृक्ष
अशोक वृक्ष कहलाते
जो शोक मिटाते
ताप, संताप मिटाते
खुशियाँ प्रकटाते
हाँ पेड़-पौधे भी,
अपना कर्तव्य निभाते
नीर सींचने वालों को
मधुर रस पिलाते
'माधुर्यगुण प्रीति''
''माधुर्यगुण का पाठ सिखाते हैं।
ऐसे तरु भी जीवन में गुरु कहाते ।
अहो, एक वृक्ष पर
कितने पंछी बैठे, कलरव करते
कोई रेन-वसेरा करते

कोई घौंसला बना जीवन भर रहते ।
वृक्ष पर पंछी बैठने से
वृक्ष को भार नहीं लगता,
इसलिए तो एक नहीं
अनेक पंछी घौंसला बनाकर रहते
वृक्ष ने अपने तिनकों से
पंछी के लिए घौंसला बनाया।
किन्तु गिराया कभी नहीं
गिराता तो वानर ..
आप चाहे वृक्ष के ऊपर बैठो अथवा
नीचे ऊपर बैठोगे फल देगा।
नीचे बैठोगे तो छाया।
धन्य है- परोपकार की प्रयोगशाला और
सिध्दान्तशाला
हम दोनों सीखें
तपन स्वयं सह लेते
छाया में हमें बिठाते
तरुवर हों
या गुरुवर
दोनों की प्रकृति
एक सरीखें
दोनों की नीति
एक सरीखी

दोनों की प्रीति
एक सरीखी
दोनों की रीति
एक सरीखी
सच है
सज्जनों की विभूतियाँ
परोपकार के लिए होती है
परोपकराय सतां विभूतयः

पर्यावरण औषधि

पत्र-पत्र औषधियों भरा और
अक्षर-अक्षर मन्त्र भरा होता है।
कुशल संयोजक हो तो पत्र- पत्र को
औषधि बना देता।
सर्वोषधि बना देता ।
अक्षर-अक्षर को मन्त्र

⊡

जल ही जीवन

प्रकृति और पर्यावरण
ये हवा और पानी में
शक्ति और शांति के
अक्षुण्ण अक्षय स्रोत है
वायु है तो आयु है
जल है तो जीवन है
अतः मेरा नम्र निवेदन है
जल बचाओ, जीवन बचाओ।
क्योंकि
जल ही जीवन हैं

⊡

प्रकृति पवित्र होती
पवित्रता में प्रसन्नता वास करती है-
सूक्ति चरितार्थ होती है-
जहाँ-जहाँ पवित्रता वहाँ-वहाँ प्रसन्नता
प्रकृति निर्भय है,
अभय है

सदय है
निर्भय है सो निरायुध है
जिसे अहिंसा की सुध है,
होता वही निरायुध है।
जो स्वभाव से रहें असुंदर
रखतें तन पर भूषण हैं।
बैरी मुझको जीत न लेवे
रखते शस्त्र प्रदूषण हैं
लगते जो सर्वांग मनोहर
हैं अजेय शक्ति वाले
अस्त्र-शस्त्र-वस्त्राभूषण भी,
वीतराग ने तज डाले

⊡

पृथ्वी

प्रकृति का, सर्व प्रथम तत्त्व,
पृथ्वी ही तो है।
थल है तो जल है
जल है तो जलवायु है
जलवायु है तो आयु है,
पवन है तो जीवन है
पृथ्वी ही तो
पर्यावरण का आधार है
जिसका सब ओर विस्तार है।
आधार के विना
आधेय की कल्पना भी तो
नहीं की जा सकती
आधार होने पर आधेय हो अथवा न हो
किन्तु
आधेय को तो आधार अनिवार्य है
इसलिए
पृथ्वी प्रकृति की आधार धरा है।
गुणों का आधार गुणी है

"द्रव्याश्रया निर्गुणाः गुणः"
द्रव्य के आधार रहा हूँ, रहूँगा।
सो सर्वस्व समर्पण करके
अपना किञ्चित् कुछ भी नहीं
गुण का कोई गुण नहीं
यही तो गुण का गुण है
सो गुणी में गुण समाया
गुणी ने समाया
पूरा हूँ या अधूरा
जो भी हूँ, जैसा भी हूँ तेरा ही हूँ
तेरा तुझको अर्पण- क्या लागे मेरा
अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम ।
गुण का अन्य आश्रय कहाँ
गुणी के सिवा प्राश्रय कहाँ
सागर बूँद समाय

⊡

प्रकृति–शिक्षा

प्रकृति सिखाती
मानव सीखो –
क्षमाशील हो धरती सम।
प्रसन्नता हो शुचिजल सम।।
कर्म जलाओ, अग्नि सम।
बढ़ते जाओ, सरिता सम।।
तू निर्लेप, गगन सम हो।
तू निःसँग, पवन सम हो ।।
तू अक्षोभ, उदधि सम हो ।
तू सर्वोच्च हिमालय सम ।।
सागर सम गम्भीर रहो।
गिरि सुमेरु सम, धीर रहो।।
सूरज सा, तेजस्वी जीवन।
चन्दा सा, ओजस्वी हो मन।।
भद्रभाव हो, वृषभ सरीखा।
घोर पराक्रम, सिंह सरीखा।।
स्वाभिमान गजराज सरीखा।
सदा सजग, वनराज सरीखा।।

अनियतवासी, नाग सरीखा,
इन्द्रिय जेता कछुआ जैसा
तोता जैसा, कोमल तन हो,
कोयल जैसा, मधुर वचन हो।
गुणानुरागी, भौंरा जैसा।
परोपकारी तरुवर जैसा।।
दानी रहना, कल्पवृक्ष सम ।
सुरभित मन हो, चंदन जैसा।।
तरु अशोक सी, छाया देना ।
पथिकों का आतप हर लेना।।।
फलित वृक्ष सम, नम्र भाव हो।
पके फलों सा, मधुरभाव हो ।।
सृष्टि का कण-कण उपदेशक।
सृष्टि का क्षण-क्षण संदेशक।।
प्रकृति सिखाती सीख निराली।
सीख सको तो, सदा दिवाली।।

⊡

प्रकृति से संस्कृति

खेतों में आती हरियाली।
जन-जन में लाती खुशहाली।।
भारत के त्यौहार देख लो।
प्रेम भरा व्यवहार सीख लो।।
त्यौहारों की सब तैयारी।
प्रकृति कराती वारी-वारी।।
सुखद-सुयश संदेश सुनाती।
कृतज्ञता का पाठ सिखाती।।
अतः सभी को प्रकृति प्यारी।
रंग-बिरंगी न्यारी-न्यारी।।
मानव जीता प्रकृति सहारे।
बचपन बीता प्रकृति सहारे।।
जो प्रकृति को भुला रहा है।
वह विपदाएँ बुला रहा है।।
हे प्रकृति तू पाठ सिखाती।
संस्कृति को अमर बनाती ।।

⊡

चिड़िया प्रेम

चिड़िया आती।
आँखों में आँख मिलाती।।
प्रेम देख निर्भय हो जाती
जानती है-
प्रेम सो क्षेम
प्रेम से दाना चुगती।
फुर्र उड़ जाती।।

प्रकृति

प्रकृति
कृति तो है
पर
न मानवीय
न ईश्वरीय
न देवीय
न यान्त्रिक, न तान्त्रिक
न मान्त्रिक

न भौतिक
न अभौतिक
एक मात्र
प्राकृतिक
नैसर्गिक

⊡

प्रकृति सत्कार

प्रकृति
वस्तु का स्वरूप है।
विकृति
विरूप है।
प्रकृति अविकार है,
विकृति विकार है।
प्रकृति स्वीकार है
विकृति अस्वीकार है
प्रकृति सत्कार है
विकृति तिरस्कार है! हाँ–
प्रकृति का सत्कार ही
विकृति का उपचार है!
और
विकृति का उपचार ही
प्रकृति का संचार है।

⊡

प्राकृतिक संतुलन

प्रकृति संतुलित हो तो
वात, पित्त, कफ
तीनों नाड़ी सही अनुपात में चलती हैं।
तीनों नाड़ी का उचित अनुपात में चलना ही
उत्तम स्वास्थ्य की श्रेष्ठ निशानी है!
संतुलित नाड़ी और संतुलित नारी
उत्तम स्वस्थ और उत्तम संस्कार की
परिचायक है।
प्रकृति का संतुलन बनाए रखने?
के लिए
पर्यावरण रचना होगा, बचाना होगा।

⊡

प्रकृतिकार कौन ?

कृति होती
कृतिकार होता
किन्तु प्रकृति होती
प्रकृतिकार नहीं होता
ऐसा क्यों?
प्रकृति पर कृति नहीं स्वकृति है।
विकृति नहीं सुकृति है
अनादिकाल से चली आ रही यह
प्रकृति निसर्ग है, उपसर्ग नहीं
अरे ! अरे!
निसर्ग पर
उपसर्ग कैसा
प्रकृति का संसर्ग कीजिए,
आनंद लीजए पर प्रकृति पर
उपसर्ग न कीजिए

हो सके तो- ईश्वर से पहले
प्रकृति निहारिए शांति मिलेगी
क्योंकि ईश्वर भी प्रकृति स्वरूप है
स्वभाव रूप है।।

प्रकृति

वस्तु का मूल रूप है,
सहज स्वरूप है।
वस्तु का निजभाव है
सहज स्वभाव है।
यही तो धर्म है
वत्थु सहावो धम्मो "वस्तु का
स्वभाव धर्म है"
जल का स्वभाव शीतलता
अग्नि का स्वभाव उष्णता
जीव का स्वभाव
स्वभाव क्या यथार्थ गुण ।
ज्ञान – दर्शन आत्मीय गुण
क्षमा, मार्दव असाधारण भाव
जीव का भाव
शुद्धभाव ही जीव का स्वभाव है
अशुद्ध भाव विभाव है
शुद्ध भाव स्वभाव
पयडि, शील,सहावो
प्रकृति, शील, स्वभाव एकार्थवाची हैं !

प्रकृति सुखदायिनी

प्रकृति मूल है, सो अनुकूल है।
विकृति भूल है, सो प्रतिकूल है।
प्रकृति सुख रूप है,
विकृति दुख रूप है
प्रकृति शुचि रूप है,
विकृति अशुचि रूप है।
मिटाने योग्य क्या है
प्रकटाने योग्य क्या है
हेय, छोड़ने योग्य क्या ?
उपादेय ग्रहण योग्य क्या ?
प्रकृति उपादेय है विकृति हेय है
प्रकृति निरावरण है,
पर सुंदर है
विकृति सावरण
पर असुंदर है।
अतः विकृति घटायी जाती,
हटायी जाती, मिटायी जाती।
प्रकृति प्रकटायी जाती है।
''प्रकृति सुख दायिनी''

प्रकृति और आनन्द

मैं
पदार्थ की मूल प्रकृति
को देखकर, जानकर वस्तु स्वरूप का
सही ज्ञान पा, आह्लाद पाता
जो अपने ही भीतर, भीतर से आता है
ज्ञान आनंद का जनक है।

⊡

जीव समूह को
घेरे हुए आवरण। पर्यावरण ।
जीव समुदाय को
प्रभावित करने वाला
आवरण पर्यावरण ।
जीव जाति की
प्रगति में सहायक प्राकृतिक तत्त्वों का,
सम्मिलित स्वरूप पर्यावरण
जैव संरक्षक प्राकृतिक
गुण धर्मों का मूल रूप पर्यावरण

प्रकृति का प्राकृतिक रूप दर्शन पर्यावरण।
जीव से सम्बन्धित
जैविक - अजैविक
भौतिक - अभौतिक
सामग्री - संरचनाओं का नैसर्गिक
समावेश पर्यावरण है।
वायु मण्डल, जलमण्डल
स्थल मण्डल, जैव मण्डल
इनका अवधारण पर्यावरण है।
पवित्र वायुमण्डल
जीवन संचालक
जीवन संस्थापक
जीवन संरक्षक
पर्यावरण का प्रथम अवयव है!
यह वायुमण्डल जीवन शक्ति दायिनी
ऑक्सीजन
तथा अन्य उपयोगी गैसों
जैसे- नाइट्रोजन, आर्गन, कार्बन
डाइऑक्साइड,
आदि से बना है।

⊡

जल तत्त्व पर्यावरण

जल मण्डल
जल है तो कल है।
जल ही जीवन है।
जीवनदाता जल
के संसाधन
सागर, महासागर
समुद्र, झीलें, नदियाँ, बाँध
झरने, तालाब, कूप, बाबड़ी,
जलाशय आदि हैं।
पृथ्वी का सन्तानवे प्रतिशत
जल समुद्रों में हैं।
दो प्रतिशत जल वर्फ से आवरित
ध्रुवीय क्षेत्रों में है।
जी हाँ !
मात्र एक ही प्रतिशत,
ताजा जल है,
भूजल, कूपजल, जलाशयजल
के माध्यम से मानव एवं

पशु उपयोग कर पाते हैं।
जल बचाइए, जीवन बचेगा।
जल सुरक्षा, जीवन सुरक्षा चक्र है।
खेद है! पेयजल
पल-पल अपेय होता जा रहा
अपेयजल पिया जाये तो
प्रदूषित जल
रोग – बीमारी का आमंत्रण
मौत का निमंत्रण
भौतिक, जैविक, सांस्कृतिक
तत्त्व पर्यावरण के तत्त्व हैं।

⊡

पर्यावरण विज्ञान

पर्यावरण का ज्ञान और
पर्यावरण पर ध्यान
दोनों महत्त्वपूर्ण हैं।
पर्यावरण का
अध्ययन और अध्यापन
चिंतन और मनन
संरक्षण और संवर्धन समय की बहुत
अनिवार्य आवश्यकता है।

⊡

पर्यावरण के तत्त्व

भौतिक तत्त्व
अंतरिक्ष
स्थल आकृति
जल, वायु, मिट्टी, चट्टान, खनिज
रूप में मौजूद भौतिक तत्त्व हैं।
यह भौतिक आवश्यकताएँ
जो मानवीय जीवन के संरक्षक कवच हैं।
जैविक तत्त्व- पौधे, पशु-पक्षी, सूक्ष्म-
स्थूलजीव
जैविक तत्त्व हैं।
जीवमण्डल निर्माण करते हैं।

विषाक्त वायुमण्डल

मानव !
खुशियों का त्यौहार मना रहा है।
मनाये/मनाना ही चाहिए
अधिकार भी है और कर्तव्य भी
दीपावली आयी, खुशियाँ लायी।
दीप जलाइए, घर जगमगाइए।
मिठाईयाँ बाँटियें खुशियाँ – लुटाइएँ।
दीवाली की शुभकामनाएँ है।
सदा शुभ काम आएँ।।
मित्रो !
वायु प्रदूषण और पटाखा
सावधान हो जाइए....
जानलेवा,
प्राण लेवा
त्यौहार न मनाइए ।
कृपया ! इतनी तो
मानवीयता निभाइए
दया – दिखाइए

पैसो में आग न लगाइए
पटाखा मुक्त दीवाली मनाइए
पटाखा जलाना
जीवों का जलाना है।
पटाखा जलाना
पैसा में आग लगाना है।
पटाखा जलाना
पशु - पंछियों को सताना है।
पटाखा जलाना
अनीति और अत्याचार है
क्रूरतम व्यवहार है।
निर्दयता है, दुराचार है।
एक पटाखा की आवाज
सैकड़ों, हजारों
पशु-पंछी, मानवों
कीड़ों - मकोड़ों के
दिल दहला देती।
प्राण ले लेती
विकलांग बना देती
पटाखा जलाना
दिवाली नहीं
दिमागी दिवालियापन है।
भारतीय नागरिक संहिता के विरुध्द -

अमानवीय दुराचरण
जघन्य अपराध है, अक्षम्य अपराध है
- जो जो व्यवहार आचरण
हमें,
अपने प्रति अच्छा लगता है,
वैसा व्यवहार वैसा आचारण जीव मात्र के
प्रति करना
धर्म है।
पटाखा जलाना इस धर्म,
आचार-विचार के विपरीत दुराचार है।
पटाखा जलाना क्या?
दुर्घटना को गले लगाना है।
साक्षर समाज में
यदि पढ़ा-लिखा राक्षस देखना हो तो,
उस व्यक्ति को देखो -
जो अपने मन से पसंद कर, स्वयं पटाखा
खरीद?कर ला रहा।
और स्वयं अपनी मनपसंद बहुमूल्य
संपत्ति को आग के हवाले का रहा
अरे! ओ ! पढ़े लिखे मूर्ख !
हम चले देवता कहलाने,
पर मानव भी कहला न सके,
हम चले विश्व विजयी बनने,

पर विजय स्वयं पर पा न सके
हम सोचते हैं कि कैसे भी बस,
जल्दी से भगवान बनें,
पर नहीं सोचते कि,
इससे पहले इंसान बनें।

⊡

दिवाली आयी

घर-घर लक्ष्मी पूजा रचायी,
हमने घर के बाहर,पैसा की चिता बनायी,
लक्ष्मी में आग लगाई।
क्या दीपावली मनायी ?
नहीं! नहीं! यह तो
मूर्खता दिखायी।
सौ सिगरेट से जितना धुआ निकलना
उतना धुआ एक पटाखा जलाना से
निकलता है-
जो धुआ जहरीला, होता है
नाक से फेफड़ों में जाकर,
अस्वस्थ बनाता ।
पटाखा जलाने वाले
देश की सम्पदा और देशवासियों के
स्वस्थ को खतरे में डालने वाले पर्यावरण
के हत्यारे हैं।

⊡

पर्यावरण का महत्त्व

पर्यावरण सभी को,
समान रूप से
महत्वपूर्ण है।
पर्यावरण सभी को प्रभावित करता है,
सभी से प्रभावित होता है।
पर्यावरण हमारा सुरक्षा कवच है।
पर्यावरण सुरक्षचक्र है।
पर्यावरण सुरक्षा ढाल है
अभेद्य सुरक्षा चक्र में भेद पड़ता जा रहा।
बाँध में आयी छोटी सी दरार भी–
समय पर न भरी जाये तो
वह भयावह बाड़ का रूप ले लेती।
संकट में पड़ा– पर्यावरण
संकट में खड़ा– पर्यावरण
अपराध व्यक्तिगत हो सकता है
किन्तु अपराध का फल दण्ड
व्यक्तिगत नहीं
सार्वजनिक और सार्वभौमिक भोगना पड़ेगा !

क्योंकि – प्रत्येक व्यक्ति समूह का नेतृत्त्व
कर्ता है
नेतृत्व के लाभ–हानि को
समाज और देश भोगता है।

⊡

पर्यावरण समस्या
और
समाधान

अब तक
ऐसा कोई प्रश्न नहीं हुआ
जिसका उत्तर न मिला हो ।
अब तक
ऐसी कोई समस्या नहीं हुई
जिसका समाधान न हो ।
प्रश्न है तो उत्तर भी
समस्या है
तो समाधान भी
हाँ ! कर्ज ! मर्ज, फर्ज
छोटे ही अच्छे होते हैं
बड़े होने पर तो असाध्य हो जाते हैं,
इसलिए-जितने जल्दी हो सके
इन्हें चुका देना चाहिए।
शैतान दिमाग
समस्या पैदा करता है,

शीतल मस्तिष्क
समाधान खोजता है!
अज्ञानी समस्या पैदा करता
ज्ञानी समाधान खोजता
अविवे की समस्या पैदा करता
विवेकी समाधान खोजता
असंयमी समस्या पैदा करता
संयमी समाधान खोजता ।
समस्या हो या समाधान
है मानव मस्तिष्क की उपज
हम श्रेष्ठ मानव हैं-
समाधान की दिशा में कदम बढ़ायें ।
एक दीपक तुम जलाओ,
एक दीपक हम जलायें।
कुछ अँधेरा तुम मिटाओ,
कुछ अँधेरा हम मिटायें

गुरुकुल पद्धति
और
पर्यावरण

प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली
पर्यावरण पर आधारित
पर्यावरण पर संधारित
पर्यावरण संपोषित एवं
संपोषक प्रणाली रही।
शिक्षार्थी के लिए! पौधे सींचना,
गाय को चारा खिलाना,
बीज बोना, फसल तैयार करना।
बंजर भूमिको
उपजाऊ भूमि बनाने की कला
उपजाऊ को उर्वरा- बनाकर
बीज बपन से
वृक्ष तक की सहभागिता होना।
तथा
श्रम की बूँदें बहाकर
परिश्रम के मीठे फल चखना।

पर्यावरण का पाठ प्रयोग में रहा।
जो मानव! एक पौधा नहीं लगा सकता
उसे पेड़ की छाँव में
बैठने का अधिकार नहीं।
जो मानव बीज नहीं वो सकता
उसे फसल पाने का अधिकार नहीं।
जो मानव पौधा को दो लोटा पानी देकर
सींच नहीं सकता।
उसे पेड़ के मधुर फल खाने का
अधिकार नहीं।
नदियाँ न पिये कभी।
अपना जल
वृक्ष न खायें कभी,
अपने फल।
अपने तन का मन का, धन का
दूसरों को जो दे दान रे
वह सच्चा इंसान रे
धरती पर भगवान रे

⊡

आओ पर्यावरण रचायें

मानव ! जो है,
उसे बचाओ।
नहीं है, उसे बनाओ।
स्वस्थ तन
स्वस्थ मन
स्वस्थ धन
स्वस्थ वन,
स्वस्थ पवन
स्वस्थ वतन
स्वस्थ जन,
स्वस्थ भोजन
स्वस्थ सृजन का
स्वस्थ जीवन शैली चाहिए।
स्वस्थ जीवन शैली के लिए
स्वच्छ और ताजा वायु चाहिए।
वायु है तो आयु है।
पवन है तो जीवन है।
वन है तो वतन हैं।

⊡

पर्यावरण सम्पदा

पर्यावरण
आपदा नहीं सम्पदा है।
ऐसी सम्पदा जो सदा-सर्वत्र
अपने मूलभूत स्वरूप में
मूल्यांकन पाती
महत्त्वपूर्ण मानी जाती।
जो, जहाँ, जिस रूप में सुरक्षित है
उसे वहाँ ही उसी रूप में सुरक्षित रखिए।
पर्यावरण प्राकृतिक खजाना है।
पर्यावरण का आनंद लूटो
पर्यावरण न लूटो ।
जैसे सूरज से प्रकाश ले लो
चंदा से चाँदनी ले लो
वैसे-पर्यावरण से स्वास्थ्य
और शांति ले लो।

⊡

वृक्ष पर्यावरण

जमीन से जुड़ा पेड़
हजार बार फल देता है।
जमीन से उखड़ा पेड़
अंतिम बार फल देता।
अंतिम फल चाहिए,
अंतिम बार फल चाहिए
तो पेड़ काट लो
अनंत बार फल चाहिए
तो पेड़ सींच दो
पेड़ लगा दो ।

⊡

महत्त्वपूर्ण–पर्यावरणीय दिवस

पर्यावरण पंचांग

विषय	तिथि
विश्व आर्द्र भूमि दिवस	2 फरवरी
वानिकी दिवस	21 मार्च
जल दिवस	22 मार्च
मौसम दिवस	23 मार्च
पृथ्वी दिवस	22 अप्रैल
अंतर राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस	22 मई
विश्व पर्यावरण दिवस	05 जून
महासागर दिवस	08 जून
विश्व मरुस्थली करण एवं सूखा रोध	17 जून
विश्व जनसंख्या दिवस	11 जुलाई
प्रकृति संरक्षण दिवस	28 जुलाई
ओजोन–सप्ताह दिवस	16-23 सितम्बर
विश्व कार मुक्त दिवस	22 सितम्बर
हरित उपभोक्ता दिवस	28 सितम्बर
विश्व पशु पालन, योग दिवस	02 अक्टूबर
विश्व आवास दिवस	03 अक्टूबर
विश्व पशु कल्याण दिवस	04 अक्टूबर
वन्य जीव सप्ताह दिवस	01-07 अक्टूबर
अंतरराष्ट्रीय प्राकृतिक आपदा निम्निकरण	11-12 अक्टूबर

विश्व संरक्षण दिवस	24 अक्टूबर
पर्यावरण बचाव दिवस	06 नवम्बर
मानवाधिकार दिवस	10 दिसम्बर
अंतर राष्ट्रीय पर्वत दिवस	11 दिसम्बर

⊡

पर्यावरण और हम

पर्यावरण
हम सभी के लिए है।
तो हम सब पर्यावरण के लिए क्यों नहीं?
क्या हमारे यही कर्तव्य हैं?
क्या हमारे यही आनुवांशिक गुण धर्म हैं?
आओ ! जो सदा, सर्वत्र हमारे लिए तत्पर हैं
सेवारत हैं। उस प्रकृति प्रदत्त अवैतनिक
सर्वत्र व्याप्त सेवक की सुरक्षा ही करलें।
वह स्वामी स्वामी कैसा?
करे नहीं अपने जैसा?
कैसा उसका धन पैसा है
अगर गरीब निराश्रय सा।

⊡

पर्यावरण रक्षा–शिक्षा

यदि चाहते हो
पर्यावरण रक्षा
तो दीजिए –
पर्यावरण शिक्षा
पर्यावरण व्रत लीजिए
संकल्प कीजिए
प्रतिज्ञा निभाइए
उदारता दिखाइए
महानता सिखाइए

⊡

पर्यावरण दिवस मनाएँ –

सर्वप्रथम
पाँच जून उन्नीस सौ बहत्तर को
आयोजित स्टॉकहोम सम्मेलन
जहाँ हुआ विश्वभर के
पर्यावरण संरक्षकों का
शुभ मिलन
प्रस्तावित पर्यावरणीय चर्चायें,
निसर्ग के लिए समर्पित अर्चायें
मानव हृदय में दया का वास
करुणा का भाव चर्चित पर्यावरण
अर्चित अहिंसा आचरण
मुखरित हुआ – भगवान महावीर का
शुभ संदेश – जिओ और जीने दो
गूँज उठा – देश–विदेश
हम भी निज कर्तव्य निभायें
आओ पर्यावरण दिवस मनाएँ
एक नया त्यौहार मनाएँ
अपना पर्यावरण बचायें।

⊡

पर्यावरण–प्रेमी

उचित समय पर
किया गया छोटा सा प्रयास
बहुत बड़े विकास को
जन्म देता है
अभी समय है, यही समय है,
सही समय है
वट का वृक्ष बड़ा होता
बीज नहीं !
सर्वत्र सुगंध बड़ी होती
फूल नहीं।
आचार–विचार बड़ा होता
मनुष्य नहीं।
भाग्य बड़ा होता पुरुषार्थ नहीं
जल विपुल होता स्रोत नहीं।
जो सावधान, वह महान ।

⊡

जीवदया देवता

पर्यावरण चिंतक !
सृष्टि के शुभ चिंतक है।
पर्यावरण रक्षक !
प्रकृति के संरक्षक है।
पर्यावरण पोषक !
पृथ्वी के संपोषक है।
पर्यावरण बोधक !
विश्व प्रेम के संबोधक है।
पर्यावरण प्रेमी अखिल विश्व प्रेमी हैं-
पर्यावरण ज्ञानी !
दया करुणा की राजधानी है।
पर्यावरण वेत्ता ! जीवदया देवता!
परोपकारी-
इंसानों की गणना महापुरुषों में की जाती हैं!
जो एक, दो, तीन, चार,
पाँच, छह, सात, आठ, नौ, दस
इस प्रकार नहीं की जाती अपितु
इकाई, दहाई, सैकड़ा, हजार, दस हजार,

लाख, दस लाख, करोड़, दस करोड़,
अरब इस तरह की जाती।
भला इंसान कभी अक़ेला नहीं होता।
पानी की बूँद बादल से
एक आती पर अपने साथ कितनी
संख्य, असंख्य, अनंत को समाहित रखता।
परोपकारी एक में अनेक ।
क्या बादल से बरस रही
जल की बूँदों को गिन पाओगे?
कभी गिन नहीं? कभी नहीं। कहीं नहीं।
मात्र जनगणना हो सकती गुणगणना नहीं।
एक अच्छे इंसान में अनंत गुण छिपे रहते हैं!
वृक्ष में बहुत से फल वृक्ष के
पत्तों से ही ढके रहे रहते!
ये मत समझना
जो काँटों से घिरा वह फूल नहीं
और जो कष्टों से घिरा वो भला इंसान नहीं
ऐसा बिल्कुल नहीं,
सत्य इसके विवरीत पुष्पराज
गुलाब काँटों में खिलता है।
और महापुरुषों का जीवन
कष्टों में पलता है।

⊡

पर्यावरण से आशय
पृथ्वी पर पायें जानेवाले
उन जैविक एवं
अजैविक घटकों एवं उनके
आस-पास के
वातावरण के सम्मिलित रूप से है
जो पृथ्वी पर जीवन के आधार को
संभव बनाता,
विकसित बनाता
संपोषित करता
संशोधित करता,
संशोषित करता है।
सौर मंडल के ज्ञात,
अनेक ग्रहों में,
एकमात्र पृथ्वी ही
ऐसा ग्रह है,
पर्यावरण है जहाँ,
मानव जीवन है वहाँ।।
जहाँ प्राणी जीवन है।
इसका प्रमुख कारण क्या है ?

पृथ्वी पर पर्यावरण है।
पर्यावरण है जहाँ,
मानव जीवन है वहाँ।
पर्यावरण जीवन का आधार है
जल विना मछली का जीवन नहीं
पर्यावरण विना मानव- जीवन नहीं।
जैविक पर्यावरण- वनस्पति पर्यावरण
जंतु पर्यावरण का सम्मिलित स्वरूप है।
अजैविक पर्यावरण -
से अभिप्राय उस पर्यावरण से है जहाँ
थल, जल, वायु हो
थल पर्यावरण में मैदान पर्यावरण
पर्वत पर्यावरण, झील पर्यावरण,
हिमनद पर्यावरण,
मरुस्थल-पर्यावरण विभाजित होते हैं।
पर्यावरण को
अपने अनुरूप ढालने की अपेक्षा
बहुत अच्छा होता कि मनुष्य
पर्यावरण के अनुरूप ढलता है!
पर्यावरण ग्राहक बनने के साथ-साथ
पर्यावरण दाता बनता।
पर्यावरण से संसाधन प्राप्त
करने के साथ-साथ

पर्यावरण संवर्धन में योगदान भी देता।
अपना घर न सही किसी भी उर्वरा भूमि,
उद्यान में दो बीज गाढ़ देता,
दो पौधे रौप देता।
वनदाता और जीवनदाता बनता।
हे मानव !
तू प्रारंभ में, कृषि प्रधान देश में,
पर्यावरण कारक था
बाद में पर्यावरण रूपांतरकर्ता तथा
पर्यावरण परिवर्तनकर्ता बना।
अब तो मानव तूने भी मानवीयता से ही
नाता तोड़ा, सृजन कर्ता के स्थान पर
विध्वंस कर्ता बन गया।
इसीलिए तो वन/उपवन
सब कुछ छिन गया।
पर्यावरण उजड़ गया

⊡

प्राचीन काल में
मनुष्य तथा
पर्यावरण के बीच संतुलित
संबंध थे।
अब किन्तु, मानव मन में
व्यवहार में परिवर्तन आया
उपभोक्तावाद का प्रभाव छाया
भौतिक मानव कहलाया
पर्यावरण विकासक न होकर
पर्यावरण विनाशक बना।

⊡

ऋषि बनो या कृषि करो

आदिब्रह्मा, आदि विद्यादाता,
आदि विधाता, अंतिम कुलकर
नाभिराय के पुत्र राजा ऋषभदेव ने
असि, मसि, कृषि, वाणिज्य, शिल्प,
कला का उपदेश देकर,
जीवन निर्वाह की पहली शिक्षा दी।
कृषि करो या ऋषि बनो
पावन संदेश दिया
इक्षु (गन्ना) की खेती करना सिखाया
पर्यावरण का बीज वपन किया।

⊡

पर्यावरण शिक्षा

वट का छोटा दाना, बीज
जमीन में बोया जाता
समय पाकर विशाल वट वृक्ष तैयार होता।
वृक्ष वृद्ध होने के पहले
अपना भार अपने तने को सौंप देता
धन्य हैं तने जो श्रेष्ठ पुत्र की तरह
पिता का सम्पूर्ण भार
अपने कन्धे पर ले लता।
पर्यावरण विकास की यह सर्वोत्तम
शिक्षा सिखाता वटवृक्ष परिवार
सबसे उच्च शिक्षा वह है,
जो हमें केवल जानकारी ही नहीं देती,
अपितु हमारे जीवन के
अस्तित्व को मधुर बना देती है।
विश्वकवि रविन्द्र नाथ टैगोर के
यह भाव पर्यावरण की जानकारी के
साथ-साथ जबाबदारी भी लो।
पुण्ययोग से मिला आवरण
सुरक्षा कवच है! पर्यावरण

⊡

पर्यावरण शिक्षा

पर्यावरण शिक्षण
किसी भी देश के
कल्याण एवं स्वास्थ्य को
सुरक्षित और सुनिश्चित करता है।
पर्यावरण शिक्षण प्राणीमात्र के प्रति
प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक प्रेम
को जाग्रत करता है।

⊡

पर्यावरण
मनुष्यजाति एवं
पशुजाति को प्रभावित करता है।
वन विन वनराज कहाँ ?
वनराज विन वन कहाँ ?

⊡

पर्यावरण मानव सुरक्षा

भौतिक, जैविक, सांस्कृतिक
पर्यावरण कोई भी हो
सुरक्षित जीवजगत ही होता है।
मनुष्य प्रभावित होता है
मनुष्य प्रभावित करता भी है।

⊡

पर्यावरण और धर्म

भारतदेश में
श्रमण संस्कृति एवं
वैदिक संस्कृति
दोनों संस्कृतियों ने
समयानुरूप
मानव समाज को
दिशाबोध दिया।
श्रमण संस्कृति में
भावनाओं के

आधार पर
जीवन शैली का
निर्माण होता है।
पर्यावरण संरक्षण हेतु
धर्मस्य मूलं दया का
शंखनाद/जयघोष किया।

⊡

पर्यावरण और ऋषि गण

जैन श्रमण तो
अनादि से
प्रकृति से जुड़े हैं।
श्रमण का रूप यथाजात जन्मजात
शिशु सम
निर्विकार,
वीतराग स्वरूप,
निर्ग्रन्थ रूप, होता है
जहाँ वासना नहीं
वहाँ वसन की
जरूरत क्या है ?
यही कारण है दिगम्बर श्रमण सदा
निर्ग्रन्थ रूप में यत्र तत्र कुत्र
सदा सर्वदा सर्वत्र रहते हैं।
ऐसे सांस्कृतिक पर्यावरण के मूल
संतों को वन्दन ।

⊡

पर्यावरण एवं जीवन विकास

पर्यावरण
अपने आश्रित प्रत्येक जीव को
एक विशिष्ट अवसर
विशिष्ट स्वरूप
प्रदान करता है।
पर्यावरण सकारात्मक
वातावरण निर्माण करता है
जो जीवन विकास का,
मुख्य चरण है।
नकारात्मक वातावरण
प्रदूषित सांस्कृतिक पर्यावरण है
जो बालजीवन को
बर्बाद करता, अविकसित बनाता है।

⊡

पर्यावरण हमारा घर

जहाँ हमारा निवास/आवास
विकास प्रकाश
विश्वास होता
मछली का आवास
जलाशय, झील, समुन्दर
शेर का आवास, वन, गुफा, के अन्दर
पर्यावरण इधर-उधर, सर्वत्र हमारा घर

⊡

सर्वोदय भारत

भारत
विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यता है।
जहाँ ऋषि ज्ञान और कृषि विज्ञान के द्वारा
भारतीय संस्कृति एवं
भारतीय समाज को
सर्वोदय भारत
विरासत में प्राप्त हुआ।
हमारा भारत
सर्वोदय भारत था,
है, बना रहे।

⊡

राष्ट्रीय उद्यान

भारत
विश्व का
सातवाँ ऐसा बड़ा देश है
जहाँ विश्व के
श्रेष्ठतम चार
जैविक हॉट स्पॉट
तथा अनेक राष्ट्रीय उद्यान है
एवं पशु अभ्यारण्य हैं

⊡

पर्यावरण संरक्षण सब धर्मों का सार

भारत में
पर्यावरण के प्रति
गहन प्रतिष्ठा है
भारत वासियों की
पर्यावरण संरक्षण के प्रति
धार्मिक आस्था
एवं
पारम्परिक संस्कार हैं
"जीवाणं रक्खणं धम्मो"
"धम्मो दया विशुद्धो"
"धर्मस्य मूलं दया"
"अहिंसा प्रथमो धर्मः" के सूत्र
घुट्टि में पिलाये जाते हैं।
जो सिखाते हैं–
जीवों की रक्षा करना धर्म है।
विशुद्ध दया प्रकट होना धर्म है।
धर्म का आधार दया है।
अंहिसा पहला धर्म है।।

भारत में धर्म और
धर्मतीर्थनायक तीर्थंकरों के
बोधिवृक्ष एवं दीक्षा वृक्षों की
परम्परा बहुत प्राचीन और समीचीन है।
जैनधर्म के ऋषभनाथ से
भगवान महावीर तक चौबीस तीर्थंकर हुए-
सभी ने वृक्षों के नीचे तप, ध्यान, और
और केवल ज्ञान प्रकट किया।
ऐतिहासिक सत्य-तथ्य प्रस्तुत हैं।
जो आगम संस्तुत-सम्मत हैं

⊡

पर्यावरण संरक्षक !

धर्मपथ प्रदर्शक ! धर्म साम्राज्यनायक!
धर्मतीर्थ कता ! तीर्थंकरपद वन्दन!
श्रमण संस्कृति को नमन!
ऋषभ अजित संभव अभिनंदन
सुमतिपद्म सुपार्श्वजिनराय
चंद्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन।
वासुपूज्य पद पुष्प चढ़ाय !
विमल अनंत धर्म जस उज्ज्वल
शांति कुन्थु अरमल्लि मनाय
मुनिसुव्रत नमि नेमी पार्श्व प्रभु,
वर्धमान पद शीष झुकाय ।।

⊡

पर्यावरण के सर्वश्रेष्ठ संरक्षक

तीर्थंकर महापुरुष होते हैं–
जो पृथ्वी, जल, वायु,
वनस्पति ऊर्जा रूप अग्नि को
सब में जीवात्मा स्वीकार करते हैं।
कृमि, केचुआ, चीटा, चीटी, खटमल,
विच्छू भौंरा, मक्खी, पतंगा, हिरण, गाय,
बैल, हाथी.
समग्र प्राणी जाति,
प्रत्येक जीव द्रव्य को
परमात्म शक्ति वाला बताने
इतना ही नहीं, इनकी रक्षा का व्रत, संकल्प
निभाते ! अहिंसा का आचरण ही
पर्यावरण का संरक्षण है।

⊡

पर्यावरण समस्या

पर्यावरण समस्या के सन्दर्भ में
मूकमाटी महाकाव्य के लेखक
महाकवि-आचार्य विद्यासागर कहते
आवश्यकता कभी समस्या नहीं बनती,
बल्कि अनावश्यकता समस्या की जननी है।
"जलबिन्दु" महाकाव्य के लेखक
महाकवि आचार्य विरागसागरजी लिखते-
उदय किसी का भी अचानक नहीं होता,
सूरज भी धीरे-धीरे निकलता है
और ऊपर उठता है।
धैर्य और तपस्या जिसमें है
वही संसार को प्रकाशित कर सकता है।
हमें थोड़ा-थोड़ा ही सही,
नियमित प्रयास करना चाहिए।
दीक्षावन और दीक्षा वृक्ष/तपोवन और
तपस्या तरु
वन और वृक्षों से रचित
पर्यावरण
मानव मस्तिष्क के लिए

पवित्र ऊर्जा,
शुद्ध ऊर्जा
प्रदान करते हैं।
ऊर्जावान पवित्र मस्तिष्क में
विश्वकल्याण के
उत्कृष्ट विचार जन्म लेते हैं
वाह्य क्रियाशीलता से,
विमुख अन्तरात्मा में
आत्म तेज को
विकसित करते हैं
अध्यात्म जगत के प्रस्तोता,
ज्ञाता दृष्टा अनुभव करता,
आन्तरिक रहस्यों के उद्घाटन कर्ता सिद्ध
होते हैं।

⊡

वन का प्रभाव

वन का प्रभाव जीवन पर
जीवन का–प्रभाव
वन पर पड़ता है
यही कारण हैं कि महापुरुष के जन्म समय
षट् ऋतुओं के फल–फूल एक साथ आ
जाते हैं।

⊡

तीर्थंकर और पर्यावरण –

तीर्थंकर होने योग्य
शिशु का जन्म
राजभवन में होता है। माता राजमाता होती
पिता प्रजापाल होते हैं।
किन्तु वही तीर्थंकर,
ध्येय प्राप्ति के लिए
पर्यावरणीय घटनाओं से प्रभावित होकर
अंतस प्रेक्षण द्वारा आत्मज्ञान, आत्म
जागरण को
प्राप्त होकर वैराग्य भाव धारण करते हैं–
वैराग्य के कारण चिंतनीय हैं।
जहाँ पर्यावरण को
आत्म चिंतन का विषय बनाया
नीलांजना का मरण
उल्कापात
मेघ विघटन
पतझर, विद्युत पतन
हिमनाश,

ऋतु परिवर्तन
वसन्त गमन
पशुक्रन्दन
ये प्राकृतिक कारण महापुरुषों के लिए
तत्त्वचिंतन का विषय बनते।
आत्मबोध से आत्मशोध की
ओर कदम बढ़ाते हुए महापुरुष
राजभवन त्यागकर-वन में जाकर
साधना करते हैं
भगवान महावीर
वन गये सो बन गये।
पर्यावरण वेत्ता ! ने
पर्यावरण चेतना -
जागरण के लिए
अहिंसा आचरण के लिए
पर्यावरण बोध दिया
पर्यावरण को हानि पहुँचाना दण्ड है,
अनर्थदण्ड है,
सामाजिक अपराध है
नीति नहीं अनीति है, किन्तु
जहाँ पाप से भीति/भय है,
जहाँ पुण्य से प्रीति है
वहाँ पर्यावरण से प्रेम होता,

सृष्टि में योग-क्षेम होता ।
पुण्यपुरुषों का,
सम्बन्ध प्रकृति से
प्रकृति का सम्बन्ध
पुण्य पुरुषों से सदा रहा है।
भारत देश महापुरुषों का देश है।
जहाँ महापुरुषों के जन्म का उत्सव
प्रकृति ने षट् ऋतुओं के फल फूल देकर
मनाया।
दिशाओं ने धवलता,
निर्मलता धारण कर मनाया।
मेघों ने गर्जना रहित जल वरषा कर मनाया
दया करुणा के अवतार,
प्रकृति प्रेमी
पर्यावरण देवता
महापुरुषों के जन्मोत्सव को
वन ने प्रकृति महोत्सव
के रूप में मनाया।
समाज ने संस्कृति महोत्सव बनाया।
जन्म कल्याणक के साथ-साथ
पन्द्रह माह पूर्व से जन कल्याण हेतु
सर्वजन कल्याणकारी योजना में?
रत्न वितरण द्वारा प्रजा सुख सिद्धि तथा

महापुरुष

त्रिभुवन सुख सम्पादक होते हैं।
प्राकृतिक पर्यावरण द्‌वारा
प्रकृति के जीवों को सुख पहुँचाते !
सांस्कृतिक पर्यावरण द्‌वारा समाज को
सुख पहुँचाते।
जिन्हें- राजा भरत सुख नहीं पहुँचा सकते
उन्हें सुख
पहुँचाने के लिए राम ने वनवासी हो जाते।
हे पुत्र राम!
तुम कहाँ राज्य करोगे?
मैं वन में राज्य करूँगा !
प्रेम- योग-क्षेम को धारण करता है।

⊡

पर्यावरण रक्षक !

प्रज्ञाश्रमण ! पूज्यपाद ऋषिगण !
पावन चरण-आचरण
धन्य-धन्य मुनिगण !
क्या सुन्दर !
क्या असुन्दर ! न फूल से राग,
न काँटा से द्वेष,
सबकी रक्षा का आजीवन व्रत
सर्वश्रेष्ठ पर्यावरण रक्षक !
सर्वोत्तम पर्यावरण शिक्षक !
ओ मेरे गुरुवर विराग !
धन्य तुम्हारा अद्‌भुत त्याग !

⊡

पर्यावरण शिक्षण और जैन धर्म

पर्यावरण शब्द परि+ आ +वरण
परि और आङ् उपसर्ग पूर्वक
वृञ् आवरणे धातु से ल्युट् प्रत्यय करने पर
पर्यावरण शब्द सिद्ध होता है।
शब्द से पद,
पद से अर्थ,
अर्थ से तत्त्वज्ञान
तत्त्वज्ञान से आत्मकल्याण होता है,
शब्दनय को समझना सम्यग्ज्ञान है
प्रमाणज्ञान है
शब्द से अर्थ की ओर,
अर्थ से तत्त्व बोध
शब्दज्ञान से अर्थज्ञान
अर्थज्ञान से तत्त्वज्ञान
तत्त्वज्ञान से स्वपर
कल्याण की ओर चलें।

⊡

आवरण क्या?

आवृणोति = जो ढकता है,
आव्रियते = जिसके द्वारा ढका जाता है।
आवरणं = ढकना मात्र
आवरण है।

⊡

जल सुरक्षा

पेय जल को
ढककर रखना
जल सुरक्षा के लिए
उपयोग के बाद
नल का ढक्कन
ढाकना जल सुरक्षा
आँधी, तूफान आने पर पलक
झपकना नेत्र सुरक्षा है।
घर का दरवाजा बंद करना घर सुरक्षा
मानव अनेक वस्तुओं की सुरक्षा करना
जानता है
परन्तु मानव का सुरक्षा का भार और
सुरक्षा का आधार प्रकृति ने लिया
प्रकृति ने अपने सभी ओर जो
नैसर्गिक घेरा तैयार किया वह पर्यावरण
मानव का सुरक्षा कवच है।।

⊡

जल सुरक्षा पर्यावरण

एक किसान
अपने खेत को काँटों दार घेरे की
बाड़ी तैयार करता।
यह कंटक घेरा
फसलों का सुरक्षा चक्र तात्कालिक
पर्यावरण है।
वही किसान जलसिंचन के समय जलपथ
तैयार करता ताकि
अनाश्यक रूप से
जल अनाश्यक जगह
जल प्रवाहित न हो
जल सुरक्षा चक्र है।

⊡

अग्नि सुरक्षा पर्यावरण

भोजन बनाने हेतु
चूल्हा में जलने वाली
पाकशाला की अग्नि का दुरुपयोग न हो
इसलिए मिट्टी से बना चूल्हा, सिगड़ी
अग्नि का सुरक्षा कवच भी
पर्यावरण का पाठ सिखाता है।
प्रकाश हेतु प्रज्वलित लालटेन में
चारों ओर गोल काच का घेरा
अग्नि सुरक्षा कवच
पर्यावरण की प्रयोग शिक्षा है।

⊡

राजा का मुकुट

राजा के शिर पर मुकुट
सैनिक के शिर पर टोप
किसान के शिर पर पगड़ी,
विद्वान के शिर पर टोपी
शिर सुरक्षा के उपाय
प्रयोगात्मक-पर्यावरण है।
लिखने के बाद कलम ढकना
यह सब बंधन नहीं वस्तु सुरक्षा के लिए
मानव रचित अनुशासन ही
सांस्कृतिक पर्यावरण है।

⊡

धूपघट–पर्यावरण प्रयोग

समवसरण,
तीर्थंकर की सभा–द्वार पर
धधकते हुए अग्नि युक्त धूपघट
पर्यावरण को शुद्ध बनाते
मंदिर के अंदर से निकलता हुआ
सुगंधित धुआ,
पर्यावरण शुद्धि का
सफल प्रयोग है।

⊡

पर्यावरण प्रयोग

तिनके-तिनके जोड़कर,
पंछी द्वारा बनाया गया
घोंसला पर्यावरण का
स्वरचित सफल प्रयोग है।
प्राचीन काल से जैन समाज में
शास्त्रीय सम्मत अवधारणा
जल छानकर प्रयोग में लाना
स्वास्थ्य विज्ञान और दया का विधान
पर्यावरण का समीचीन प्रयोग है।

⊡

पर्यावरणीय घरेलू प्रयोग

भोजन अनंतर
वर्तन का माँजना
स्वच्छता प्रदान करना
पर्यावरण का प्रयोग है
यदि भोजन उपरांत
बर्तन साफ न किए जायें
तो वर्तन में अपशिष्ट कणों से
दुर्गन्ध आने लगती,
अतः बीमार होने के बाद,
इलाज-उपचार खोजने से बेहतर है
कि समय रहते हुए
सावधानी बरतना
समय पर
वर्तन स्वच्छ कर लेना
पर्यावरण के क्षेत्र में
घरेलू प्रयोग है,
धन्यवाद के योग्य है।

⊡

पर्यावरण के प्रतीक

पानी का बहना
हवा का चलना
सूर्य का उगना, दमकना
चंदा की चमकना
दीपक की जलना
वृक्षों का फलना
संध्या का ढलना
हिम का पिघलना
पर्यावरण का प्रतीक है
चिड़िया का चहकना
कोयल का–कुहुकना
बगिया का महकना
सफल पर्यावरण के श्रेष्ठ चिन्ह हैं।

⊡

भारत के त्यौहार एवं पर्यावरण

भारत का त्यौहार
लाता प्रेम व्यवहार
त्यौहार के दिन
व्यवहार के लिए
रक्षाबन्धन,
वात्सल्य पर्व
भाई-बहिन में
पवित्र-प्रेम की
जीवंत स्थापना करता
मधुरता का रस घोलता सांस्कृतिक
पर्यावरण का मंगलाचरण है।

⊡

परम पुण्य से प्राप्त
प्राकृतिक आवरण पुण्यावरण
पुण्य सुरक्षा चक्र पुण्योदय से
प्रकटय सुरक्षा घेरा प्राप्त
पर्यावरण करो पुण्याचरण
तीर्थंकर अवतरण और पर्यावरण

जहाँ षट्ऋतुओं उद्यान में के
फल-फूल एक ही समय आ जाते हैं-
महापुरुष के अवतरण का शुभ समाचार
सुनाते हैं।

ऐसी पुण्य रक्षित सदा
सुरक्षित पुण्य भूमि जहाँ होता है
पुण्य परि आवरण वहाँ होता है
महापुरुषों का अवतरण
पुण्यात्माओं का जन्म पुण्य
भूमि में हुआ करता है।
पापात्माओं का जन्म पाप भूमि में।
न गर्भा भारतभूमि
परम पुण्य भूमि है
क्योंकि यहाँ है चार ऋतुओं का
परिवर्तन वाला श्रेष्ठ पुण्य सम्पादक
पर्यावरण इसीलिए होता है-
तीर्थक की अवतरण..
आदि, आदिनाथ ऋषभदेव का जन्म
अयोध्या में मर्यादा पुरुषोत्तम !

श्री राम का जन्म अयोध्या में
गो वंश वर्द्क मदन मोहन वंशी वादक
श्री कृष्ण का जन्म
मथुरा में क्षमा निधान पारसनाथ का
जन्म काशी बनारस में जहाँ पुण्यवर्धक
पर्यावरण
वहाँ-वहाँ
महापुरुष - अवतरण
जहाँ-जहाँ अहिंसा का आचरण
वहाँ-वहाँ महापुरुष अवतरण
प्रदूषित पर्यावरण में मक्खी,
मच्छर जन्म लेते हैं जबकि पवित्र
पर्यावरण में महापुरुष जन्म लेते हैं।
पवित्र पर्यावरण परम पुण्य के
आचरण विना कहाँ प्राप्त होता ?
किसे प्राप्त होता?
इसलिए तो हिटलर का जन्म
भारत में नहीं हुआ।
प्रकृति को क्षति पहुँचने पर प्राकृतिक
प्रकोप,
विनाशकारी प्राकृतिक आपदाएँ मानव
जाति के साथ-साथ प्राणि जगत को
झेलने पड़ते हैं-

जैसे- भूकम्प, चक्रवात, बाढ़, सूरखा,
ज्वालामुखी ।
जो प्राकृतिक आपदाएँ अन्तजलि जगत में
भी
पूर्वानुमान का विषय नहीं पायीं।
जैसे-भूकम्प ।
सच में मनुष्य का ज्ञान वर्तमान विज्ञान
किलना बौना है? जान ही नहीं पाता-
अगले पन क्या होना?
भूकम्प प्राकृ?तिक आपदाओं में
सर्वाधिक
विध्वंस रूप दिखाते हैं।
प्रतिवर्ष लगभग दस हजार
मनुस्यों की जान भूकम्प ले जाते हैं।
यह भी ज्ञात हो चुका कि साढ़े चार
परिमाण तक के
भूकम्प भारत में कहीं भी आ सकते हैं जो
कमजोर मकानों, इमारतों को क्षनि पहुंचा
सकते हैं।
अठारह सौ उन्नीस कच्छ क्षेत्र में भूकम्प
उन्नीस सॉ
चौसठ में जापान के निगाला शहर में
भूकम्प मोरक्को,

ताशकंद शहर में भूकम्प उन्नीस सॉ
छियत्तर तंगशान
चीन में भूकम्प एक मात्र तंगशान
भूकम्प में दुढ़ लाख व्यक्ति मर गये।
उन्नीस सौ चौरासी में सिल्चर
उन्नीस सौ दि?यासी में धर्मशाला
उत्तर काशी
उन्नीस सॉ अनसी भारत-बर्मा सीमा
भारत-नेपाल सीमा उन्नीस सॉ
इकानवे उन्नीस सौ लेरानवे लातूर महाराष्ट्र,
भारत भारत के भूकम्प इतिहास में तथा
कच्छ, शिलांग, कांगड़ा बिहार-नेपाल,
असम में भूकम्प आये हैं।
जल सम्पदा है।
ख्जल जीवन है सम्पदा का
सदुपयोग और समुचित उपयोग करना
जरूरी है.
क्योंकि - जल बी जीक ही
भारतीय संस्कृति और पर्यावरण
भारतीय संस्कृति पर्यावरण संपोषक
संस्कृति है।
इसमें पर्यावरण के अवयप पृथ्वी, जल,
अग्नि, वायु

वनस्पति को जीव मानकर उसकी रक्षा
का विधान
भारतीय धर्म शास्त्रों में धर्माचार्यों ने
किया।
तथा संरक्षण हेतु संस्कारों का प्रयोग
सिखाया।
साथ ही यर्यावरणीय अंगों को छेदन-भेदन
करने पर
अनर्थ ५ण्ड ५०९ मान कर
मानव को दण्ड संहिता ४)
हिस्सेदार बताया
वृक्ष, वन, वनस्पति प्रश्नी के आभूषण
प्रकृति के उपहार है!
यदि धरती माँ है तो क्या माँ के
आभूषण सुधरतीपुत्रों द्वारा दिन्न-भिन
किये जाने चाहिये नहीं ।
सावधान रहिए- जीवित मानव
प्रकति के जुजु रहता है तब तन्
प्रदूति उसन संरक्षण करती है।
हम प्रकृति उत्पाठन्डी संरक्षकहै।
प्रकृति और पर्यावरण समानार्थी है।
प्रकृति ज्ञान का खजाना है।
प्रकृति का संरसन ज्ञान सम्पदा

रसच्छी वृक्ष सम्पदा हमें क्या देती है-
आँवलासे विटामिन सी मिलेता है।
बरगद का दूध उपयोगी होता है।
वेल से पेट सम्बन्धी विकार इरले
अशोक वृक्ष स्त्रीरोग कोइ
(कजही लेग्नि पीपल बुद्धि बढाता
मोबाइल और पर्यावरण
सेल्युलर टावर्स और मोबाइल (चलित
भाष यन्त्र)
से उत्पन्न इलेक्ट्रो मैग्नेटिक रेडिएशन
प्ले कैन्सर इन्फर्टिलिटी औ नर्वस
डिसआर्डर की
आशंका बढ़ रहीं टूजी टापर्ष से बीस
बार ऊर्जानिकली फोर-फाइब आ चुके हैं।
कि मोबाइल ने निद्रा छीन ली।
निद्रा ने भोजन छीन ली।
भूख की कमीने जंसजमल भूख दोन
अस्वस्थताने बुहिड, शनिहोनी
प्रकृति और संस्कृति
प्रकृति से संस्कृति का अटूट रिस्ता है।
प्रकृति में खुससली हरियाली आती ही
संस्कृति में खुशहाली आती चे
प्रकृति आधार है संस्कृति आधेय है।

प्रकृति में फसल आने पर बी.
संस्कृति नै त्यौहार मन्यया जाता।
प्रकृति और स्वास्थ्य
प्रकृति के सान्निध्य में रहने से. उलझनें,
तनाव, अवसाद चिंता, भय, विषाद स्वतः
दूर होते हैं।
क्योंकि-
प्रकृति में खेलो। खेलोगे तो खिलोगे
प्रकृति से खिलो
संस्कृति को खिल-खिलाओं
प्रकृति मो प्रसन्नता देगी
हरियाली को निहा लें से
एकाग्रता और कार्यकुशल रचना धर्मिता
तपती दोपहरी में छायादार बरगद,
पीपल, नीम की शीतल छाँव कौन नहीं
चाहता मिले तो सही शीतल पेय मधुर
यानक मन्द सुगंधित पवन के झौंके
तन-मन को आनंद से भर देते हैं
ऊर्जान्वित कर देते हैं,
जब कोई नहीं संभालता तो
प्रकृति माँ संभालती संवारती है।
प्रवासास माँ की गोद में
जन्म लेने के बाद

प्रकृति माँ की गोद में
हम जीवन जीते हैं।
प्रकृति की रक्षा- माँ रक्षा,
माँ की सेवा
अपनी सुरक्षा निश्चित कर देती है।

⊡

प्रकृति और संस्कृति

प्रकृति और संस्कृति सहेलियाँ हैं।
जहाँ जैसी प्रकृति, वहाँ वैसी संस्कृति
प्रकृति में वसन्त आने पर,
संस्कृति में वसन्तोत्सव-आ ही जाता है।
प्रकृति में वर्षा ऋतु आने पर
संस्कृति में
हरियाली महोत्सव
प्रकृति में वर्षा ऋतु की
फसल आने पर संस्कृति में दीवाली उत्सव
प्रकृति- में भाद्र माह आते ही
संस्कृति में पर्वराज पर्युषण
प्रकृति ने संस्कृति को आमंत्रण दिया
संस्कृति ने प्रकृति का अभिनंदन किया।
समर्पण किया।
प्रकृष्ट कृति, श्रेष्ठ कृति,
परम-पावन पवित्र-कृति प्रकृति है।
सम्यक् समीचीन,
रीति-नीति-प्रीति संस्कृति है।

⊡

पर्यावरण संरक्षण

संवर्धन हेतु, हमारा पहला उपाय
हमारे घर से,
हमारे घर में,
हम से प्रारंभ हो
हम अपने घर इण्डोर प्लाण्टस्
जैसे–एलोवेरा (गवार पाठा), रबर प्लाण्ट
स्नेक प्लान्ट, स्पाइडर प्लाण्ट अथवा
गुलाब, जूही, चावला, चम्पा, चमेली,
केतकी, हर श्रृंगार पुष्पवाटिका लगायें
रंग, पुष्प चिकित्सा भी होगी,
सुगंध भी मिलेगी ! किन्तु
विलास के लिए नहीं, आत्म विकास के
लिए !
गुलाब की गंध नासिका से
प्रवेश पा शांति की अनुभूति कराती।
तो वहीं गुलाब जल की दो बूँदें ही सही।
नयनों में शीतलता दे, तपन हर लेती हैं
एलोबेरा तो लूँ उतार देता है।

एलोबेरा का, पराठा,
ज्वर को भी उतार देता है।
पाँव से लेकर शिर तक ऐलोवेरा
शीतलतादायक औषधि लगाओ,
गर्मी भगाओ ।
मन्दार जाति (अकौआ) की छोटी सी
डली दूध में डालकर,
दूध को ओंट लिया जाय
माबा बनाकर, खिलाया जाये तो।
तो बुखार उतर जाता है।
चमेली के
दस-बारह पत्ते
चवा लिए-जाये तो
मुँह के छाले ठीक होने में
फिर क्या देरी।

प्रकृति और आयुर्वेद रहस्य

भारतीय संस्कृति
आयुर्वेद की संस्कृति है
आयुर्वेद की जननी भारत की प्रकृति है
प्रत्येक देश की प्रकृति
निराली-निराली होती है।
इसीलिए वहाँ-की बीमारी और
चिकित्सा भी वहाँ निराली-निराली होती है।
हाँ! -प्रकृति में,
जहाँ जो पाया जाता
यदि वह पवित्र है, भक्ष्य है,
सेव्य है तथा, स्वास्थ्य और
साधना के अनुकूल हो
तो अवश्य खाना चाहिए
क्योंकि - खाने के लिए नहीं-जिओ
जीने के लिए खाओ !
जहाँ पथरीला स्थान होता है
चोट लगने की संभावना ज्यादा होती है।
वहाँ रक्त प्रवाह को रोकने वाली

औषधि -भृंगराज, (घमरा)
प्रकृति में पायी जाती है।
रोग-बीमारी
द्रव्य-क्षेत्र, काल, भावों के
अनुसार उत्पन्न होते हैं
इनकी चिकित्सा का उपाय भी
उसी द्रव्य क्षेत्र, काल,
पदार्थों के आस-पास
प्रकृति में जरूर पाया जाता है।
प्रकृति संरक्षिका है। समझो तो सही।

⊡

प्रकति और स्वास्थ्य विज्ञान

सौ रोगों की एक दवा,
प्रातःकाल की शुद्ध हवा।
एक अनार सौ बीमार ये लोक उक्तियाँ
प्रसिध्द क्यों है?
प्रयोग करने पर सिद्ध हुई,
तभी चर्चा में आने पर प्रसिद्ध हुई
वायु आयु का सम्बन्ध है
प्रकृति से वन का, वन से पवन का
पवन से जीवन का पारस्परिक संबंध है।
अनार एक ऐसा फल है,
जो सैकड़ों बीमारी का इलाज करता है।
ध्यान रखा जाये
अनार का छिल्का
फेकने के लिए नहीं है,
तत्काल छोटे-छोटे हिस्से करके
दाना के साथ खालो।
अथवा छिल्का
सुखाकर, सेंककर खालो,

खाँसी ठीक करेगा।
दन्तमंजन तो बना ही सकते ।
छिल्का रसरक्षा कवच कहलाता
व्यर्थ नहीं फेका जाता है!
उपयोग न जानने पर
इंसान क्या-क्या नहीं खो देता।
अज्ञान को खोना चाहिए
वस्तु को नहीं। व्यक्ति को नहीं।

⊡

शुध्द हवा, श्रेष्ठ दवा।

पृथ्वी स्पर्श,
सात्विक भोजन, खिलीधूप सेवन से
स्वास्थ्य लाभ होता है।
प्रकति में स्वास्थ्य संजीवनी है।
प्रकृति का रिस्ता
मन, शरीर और आत्मा के साथ
पेड़ पौधे, झरने, पंछी का कलरव नाद
शांति देता है।

⊡

पर्यावरण शिक्षा–

पर्यावरण शिक्षा को पाठ्यक्रम में
समुचित स्थान
सैद्धान्तिक (थ्योरी)
प्रयोगात्मक (प्रक्टीकल) रूप से दिया एवं
किया जाना चाहिए।
ताकि पर्यावरण के निर्माण में सहयोग
मिले।

⊡

पर्वत और पर्यावरण

पर्यावरण की शुद्धता
पर्वतीय वनों,
वनस्पतियों वृक्षों की शुद्ध वायु में,
पर्वतीय झरनों,
नदियों के औषधिमय जल में,
सामान्य भूमि की अपेक्षा पर्वत का
पर्यावरण बहुत अधिक प्रतिशत पवित्र
होता है।
वायु वायु को शुद्ध बनाती है
जल जल को प्रवाहित कर शुद्ध बनाता है।
यह पर्वत पूज्य, पावन होते हैं।
अतः व्यक्ति व्यक्ति से प्रेम करने के
साथ-साथ प्रकृति से प्रेम करे।

⊡

पर्यावरण सुरक्षा

पर्यावरण
सुरक्षा के लिए
वन आधार हैं
मुंबई महानगर के
पर्यावरण की अपेक्षा
मात्र दो सौ किलोमीटर दूर घोटी का
सह्याचल की सर्वोच्च चोटी का
पर्यावरण जल, थल, वायु,
वनस्पति आकाश मण्डल विशुद्ध है
जहाँ शुध्द आक्सीजन मिलती जो
स्वस्थ जीवन के लिए अनिवार्य है।
आस-पास का वात (वायु) वलय
आवरण ही पर्यावरण है।

⊡

पर्यावरण और जैन पूजन हवन पद्धति

जैनधर्म में
जैन श्रावकों द्वारा
प्रतिदिन ईश्वर अर्चना किया जाता है
उपसंहार में,
विश्वशांति की महाकामना के साथ
विश्वशांति यज्ञ किया जाता है।
कर्पूर प्रज्वलित
शुद्ध अग्नि में
दशांग धूप का
क्षेपण किया जाता है
जिसक पवित्र ऊर्जाशाली सुगंधित धुँआ
पर्यावरण को शुद्ध बनाता है।

⊡

श्रावक के कर्त्तव्यों का पर्यावरण में योगदान

जैन पूजन/स्वाध्याय,
जप/तप/दान
प्रतिक्रमण
सामायिक
आवश्यक
ये श्रावक के कर्तव्य
सांस्कृतिक पर्यावरण
को पवित्र बनाते हैं।

पर्यावरण एवं न्याय

भारतीय संविधान में
पर्यावरण- अधिनियम की
धारा २ (क) के अनुसार-पर्यावरण में -
वायु, जल, भूमि,
मानव, जीव-जन्तु,
पेड़-पौधे
इनके पारस्परिक
संबंध समाहित हैं

भारत और भगवान शब्द में पर्यावरण

भा - प्रकाश में
रत = रहने वाला
भारत पर्यावरण का प्रतीक है।
भ = भूमि
ग = गगन
व = वन, वायु
अ- अग्नि
न = नीर = जल
भगवान शब्द में समाहित हैं।

⊡

पर्यावरण दिवस

पर्यावरण दिवस
प्रतिवर्ष पाँच जून को विश्व पर्यावरण
दिवस तथा छब्बीस नवम्बर को विश्व
पर्यावरण संरक्षण दिवस
जरूर मनायें प्रकृति एवं पर्यावरण का साथ
निभायें जो प्रकृति
हमारा–जीवन भर साथ निभाती
हम उसके लिए साल में सिर्फ दो दिन तो
साथ निभायें।

पेड़ बचाओ, पानी बचेगा

जल भरे वारिद
वृक्षों के आमंत्रण पर आते हैं।
हम मनुष्य बादलों को नहीं ला सकते
किन्तु
जो वृक्ष बादलों को लाने की व
जल
बरषाने की सामर्थ रखते हैं ऐसे
वृक्ष तो हम लगा ही सकते हैं।
वृक्ष लगाइए, बादल बुलाइए
जल बरसाइए

⊡

एक व्यक्ति, एक वृक्ष

भारत सरकार
अपने देशवासियों को
निःशुल्क पौधे दे रही
ताकि प्रत्येक नागरिक अपने खेत-
खलिहानों,
उद्यानों में, घर के समीप पौधा-
रोपे संरक्षण करें
एक बीज लें, एक वृक्ष दें।

⊡

पर्यावरण की आवाज भारतीय फिल्मों में

पर्यावरण की आवाज उठाने वाली
फिल्मों में, सर्वश्रेष्ठ फिल्म पर
''रजत कमल'' ''पुरस्कार प्रारंभ हुआ
फिल्म 'इरादा' को मिला।
तथा असमिया फिल्म–बोनानी को मिला।
फिल्म'चेलुवी' और ''कड़वी हवा'' भी
स्पेशल मेन्शन ''श्रेणी'' पुरस्कार मिला
2005 में बनी फिल्म ''शिखर'' ने भी
पुरस्कार पाया।
लगान, गाइड, जल आदि पर्यावरण पर
आधारित पंसदीदा फिल्में हैं।

⊡

एक वृक्ष दस पुत्र बराबर

एक वृक्ष दस पुत्र बराबर
यह कहावत प्रसिद्ध है।
वृक्ष, सन्तान की अपेक्षा,
अधिक फलदायक हैं
क्योंकि पुत्र सुपुत्र भी हो सकता,
कुपुत्र भी हो सकता पर
वृक्ष तो पीढ़ी दर पीढ़ी
हमें लाभ पहुँचाते हैं।
अतः वृक्षारोपण
संस्कारों का अंकु रारोपण है
ये सांस्कृतिक परम्पराओं का रक्षा कवच भी।

⊡

मनुज प्रकृति का अंग

मनुज
प्रकृति का
उपभोक्ता नहीं
अपितु प्रकृति का अंग है।
अपने अंग की तरह ही
प्रकति की रक्षा, पर्यावरण की सुरक्षा
करना चाहिए ।

⊡

ध्वनि प्रदूषण

मैंने
अपने साधक जीवन के
तीस वर्ष पैदल-
विहार में बिताएँ
एक खास अनुभव आया
वनमार्ग से चलने पर,थकान कम आती
तथा शांति महसूस होती है।
ज्ञान-ध्यान, जाप, स्वाध्याय में
चित्त लीन रहता
आनंदानुभूति होती है।
जबकि महानगर मुंबई के व्यस्ततम
यातायात पथ से
गमन करने पर
मात्र दो किलोमीटर, चलने पर विशेष
थकान आती है तथा अशांति क्यों?
ध्वनि प्रदूषण का प्रभाव

⊡

पर्यावरण का प्रभाव

पर्यावरण
उन सभी बाहरी प्रभावों का समूह है,
जो जीवों को भौतिक तथा जैविक
शक्ति से प्रभावित करते हैं।
तथा प्रत्येक जीव को घेरे हुए हैं।

⊡

पर्यावरण का प्रभाव

पर्यावरण का प्रभाव
जीवन–मरण तथा
आचार–विचार पर अवश्य पड़ता !
भारतीय मूल का परिवार
यदि अमेरिका में
अपना परिवार बसा लेता है
तो आगामी पीढ़ी का
रूप, रंग, भाषा बोलचाल में
परिवर्तन स्पष्ट देखा जाता है।
हमारी प्रकृति
हमारा भविष्य

कृपया बचाइए
भविष्य निधि के रूप में
अधिकोषालय में
वित्त जमा कर रखने की अपेक्षा
प्रकृति में बीज बो दिए जायें।
जो आगे वृक्ष बनाकर छाया भी देंगे।
जीवन के साथ भी जीवन के बाद
भी प्रकृति हमारी साथी।

⊡

पर्यावरण एवं स्वच्छता

स्वच्छता उत्तम स्वास्थ्य का साधन है।
स्वच्छता सेवा का पहला मंत्र है।
स्वच्छता हमारा परिचय पत्र है।
मध्यप्रदेश इन्दौर शहर का नाम पूरे
भारत देश में स्वच्छता के नाम पर
प्रसिद्ध हुआ।
स्वच्छ भारत-स्वस्थ भारत।
स्वभाव में सुन्दरता बास करती है।
प्रकृति शब्द का की अर्थ स्वभाव है।
प्राकृतिक सौन्दर्य की तुलना
विश्व के किसी भी कृत्रिम पदार्थ से
नहीं की जा सकती।
फूलों की घाटी को
विश्व धरोहर के रूप में।
मान्यता मिली है।
सच है, प्रकृति में जीने वाला
इंसान भी, भगवान सा लगता है।

समुद्र

पृथ्वी के इकहत्तर प्रतिशत भाग
में जल, उन्तीस प्रतिशत भाग में थल है।
विश्व में पाँच महासागर हैं।
प्रशान्त महासागर,
अटलाण्टिक महासागर
आर्कटिक महासागर, हिन्द महासागर

⊡

समवसरण और पर्यावरण

तीर्थंकर अरिहंत भगवान की उपदेश देने
की सभा जहाँ देवगण, मनुष्यगण,
पशुगण आकर के दिव्यध्वनि के महान
अवसर की समान रूप से प्रतीक्षा करते
हुए विराजते हैं वह समवसरण कहलाता।
समवसरण भूमि गोल होती है।
इन्द्रनील मणि रचित होती है।
चारों दिशाओं में बीस-बीस हजार सीढ़ियाँ
होती हैं।
ऊँचाई पाँच हजार धनुष लगभग ३०००
फीट से अधिक है।
अड़तालीस मिनट के भीतर आसानी से
चढ़ सकते जहाँ-जहाँ समवसरण सभा
लगी वह
सभी स्थल पर्यावरणीय थे।
आज भी है, आगे भी रहेंगे।
चन्द्रप्रभ तीर्थंकर का आगमन
म.प्र.के दतिया जिलास्थित प्राकृतिक

पर्वतीय रम्यस्थल सिध्दक्षेत्र सोनागिर जी
में सौलह बार आगमन हुआ।
भगवान शीतलनाथ का समवासरण भेलसा
विदिशा में जहाँ आया आज भी
वहाँ पर्वतीय मालाएँ हैं
साँची के स्तूप नाम से प्रसिद्ध हैं
भगवान पार्थनाय की समवशरण आगमन
बुन्देलखण्ड म.प्र.के छतरपुर मण्डलस्थ
श्री
सिद्ध क्षेत्र जैनागिर में हुआ आज भी
यह स्थान प्राकृतिक पुष्प, पादप वन,
वृक्ष, वनस्पति, नदी, पर्वत, झरने सभी
रम्य परम पावन
मनहारी लगते हैं
ये सभी मैंने-पद विहार करके स्वयं
पहुँचकर अनुभूतकिए भगवान महावीर का
समवण तो हमारी दीक्षा भूमि अतिशय
क्षेत्र वरासोजी नदी के तट प्राकृतिक
सौन्दय से भरपूर है।
यहाँ आगमिक ऐतिहासिक सत्य, तथ्य
प्रस्तुत करने का प्रयोजन पर्यावरण का
दिग्दर्शन पर्यावरण का संरक्षण, पर्यावरण
संवर्धन, शिक्षण-प्रशिक्षण प्राप्त हो।

प्रकृति को क्षति पहुँचाये बिना.
इतने महाविशाल बारह किलोमीटर
विस्तार वाला सभा मण्डप तैयार हुआ।
चैत्यप्रासाद, जल भूमि, लता भूमि,
उपवन भूमि ध्वजभूमि, कल्पवृक्ष भूमि,
भवन भूमि, श्री मण्डप
जहाँ आठ भूमियाँ होती हैं,
गंधकुटी के तीन पीठ, चार परकोटा,
समवशरण सभा देवरचित रचना
प्राकृतिक सौन्दर्यसम्पन्न अनुपम संरचना
महामनोहर, रम्य,
दिव्य, भव्य, नव्य, ललित ललाम
कलाओं का
चित्रण समवसरण के चार महादुवारों पर
चार तोरण द्वार स्वर्ण स्तंभों पर
आधारित होते हैं तोरण द्वार के बाहर
अष्ट प्रकार के मंगल द्रव्य संख्या में
एक सौ आठ एक सौ अ. नव-निधियाँ
प्रत्येक एक सौ आठ। धूपघटक्या?श्रृंगार।
पर्यावरण के
प्रगति पथ पर
उन्नत जाने वाले
पाँच हजार सोपान चढ़कर

चार दिशा में तीर्थंकर की अवगाहन से
बारह गुणे ऊँचे
मानस्तंभ
मानस्तंभर चा रत्नों से,
कैसे मान गलाता है। रत्नराशि का ढेर
दूसरा मन में मान दिलाता है। आप विराजे
उसके
अन्दर चमत्कार कर देता है,
मानविखण्डित होता भविका,
दर्शन जो कर लेता है।।
प्रत्येक मानस्तंभ के द्वार के निकट
चार वापिका, प्रत्येक वापिका के
व्यालीस-व्यालीस जलकुंड होते हैं।
इनकुंडों में पाव धोकर ही सभाएँ
अंदर प्रवेश करते है कलात्मक घंटा,
ध्वजा, चामर माला, मोतियोंकी झालर ये
सब पर्यावरण के अंग है।
तोरण द्वार पर धूपघट में प्रज्वलित
अग्नि सुगंधित धुँआ
सर्वप्रथम अल्प मात्रा में किन्तु
अनिवार्य परिशोधक अग्नि तत्त्व
खातिका भूमि-में जल तत्त्व
लता भूमि में - वनस्पति तत्त्व

उपपन भूमितत्त्व वन, वृक्ष, शुद्ध
वायुतत्त्व कल्पवृक्ष भूमि में- वायुतत्त्व
- जलमण्डल, वायुमण्डल, स्थलमंडल
सभी प्रकार के ऊर्जा मण्डल
प्रकृति का कण-कण उपदेश देता है।
समझदार श्रोता जो हो।
महाविस्तारशाली देवरचित रचना में एक
भी वृक्ष नहीं कटा नहीं घटा पर्यावरण को
पूर्ण संरक्षण मिला समवशरण रचनाने
ऊँचाई पायी पर प्रकतिको क्षति न पहुँचाई
तभी तो चैत्य भी हैं, प्रासाद भी है, तभी
तो देवरचित कहायी
प्रत्येक पाँच प्रासाद के अनंतर के
एक चैत्यालय सांस्कृतिक पर्यावरण
का पावन मंगलाचरण देवरचित
अवतारण मंगल आचारण
दूसरी भूमि खातिका
जलसरसी शीतलजल से भरी
खिले शतदल से सुगंधित वातावरण
अहो पर्यावरण

⊡

लता भूमि

लता भूमि
वल्लरियों से शोभा पाती
स्वादिष्ट अंगूर फल आदि
लता पुष्प एवं
लता फलों से
सुसज्जित
लताभूमि में
पवित्र कलरव श्रवण
अहो पर्यावरण

⊡

उपवनभूमि

उपवनभूमि
चार दिशा में
विहंगम वन
अशोक वन
सप्तपर्णवन
चंपकवन
आम्रवन
सभी पर प्रतिमाएँ
सो चैत्यवृक्ष
पर हो रहा
शुभाचरण
अहो पर्यावरण
फल-फूलों से
लदे हुए
तने डालियाँ
झुके-झुके
कोयल की कुहुक
चिड़िया की चहक

बगिया की महक
अहो प्रकृति–दर्शन
अहो–पर्यावरण

⊡

प्रकृति और पक्षी

प्रकृति और पक्षी
ध्वज भूमि में
वस्त्र ध्वजाओं में
माला, वस्त्र,
मयूर, कमल
हंस, गरुड
सिंह, बैल, हाथी
चक्र, दस प्रकार की ध्वजाएँ
प्रत्येक एक सौ आठ होती
छोटी ध्वजाएँ अनेक होती
जिनदेव की विजय पताका हैं
समवशारण में प्रकृति का अवतरण
अहो पर्यावरण

⊡

कल्पवृक्ष भूमि

कल्पवृक्ष भूमि
कल्पनातीत
शोभा सम्पन्न
दस प्रकार के
कल्पवृक्ष
याचित फल दाता
मनुष्य को मनुष्य से
याचना करने पर
स्वाभिमान को ठेस पहुँच सकती
अतः यह पर्यावरण
व्यक्ति को प्रकृति
समर्पित है।
प्रकृति दान देकर
अभिमान नहीं करती
अपमान नहीं करती
अहो दानी! अहो दानम्! अहो दानी!
अहोदानम्

⊡

पर्यावरण पोषक

पर्यावरण पोषक
नमेरु
मंदार
संतानक
पारिजात
ये चार सिद्धार्थ वृक्ष होते हैं
स्तूप में सिद्ध प्रतिमाएँ
भवन में
जिन
जिन स्तवन
मांगलिक आराधन
अहो पर्यावरण
72 स्तूप, प्रकटाते स्वरूप

⊡

समर्पण

प्रकृति में
जीने वाले, रहने वाले
प्रत्येक प्राणी
के उपकार में समर्पित
करुणा की
केशर से रचा पर्यावरण महाकाव्य
दिगम्बर सन्त
महाकवि आचार्य विभव सागर

⊡

पर्यावरण प्रकृति

आवरण
गुण पर हो
तो हटाया जाता है।
जैसे ज्ञानावरण, दर्शनावरण
यह आवरण
आत्मा के/ जीव के
गुणों/शक्तियों को
ढकते हैं
प्रकट नहीं होने देते हैं
जैसे–शैवाल जल को ढक लेती
तथा
मलिनता वस्त्र की उज्ज्वलता को
ढक लेती है।
अतः उस आवरण को हटाया जाता
प्रदूषण मलिन आवरण है। विकृति है।
अतः हटाया जाना जरूरी है
किन्तु पर्यावरण जीवन रक्षक
आवरण है उसे बचाया जाता है।

प्रदूषण विकृति है
पर्यावरण प्रकृति है
विकृति दुख दायिनी
प्रकृति सुखदायिनी
भावों की विकृति
कर्म बन्ध कराती
भव-भ्रमण कराती
अतः आत्मा द्वारा
विकृति हटायी जाती।
प्रकृति प्रकटायी जाती।
विकृति में दुःख
प्रकृति में सुख है
आओ..
विकृति में नहीं
प्रकृति मे जियें
आनन्द रस पियें

⊡

आवरण सुरक्षा कवच

आवरण सुरक्षा कवच
प्रकृति में पकने वाली
फसलें
फल
फूल
सब्जियाँ
आवरण सभी पर होता
जो उनका रक्षा कवच
रस रक्षक होता है।
प्रकृति का सर्व श्रेष्ठ फल
श्रीफल (नारियल) कहलाता है
इस फल की विशेषता है कि
यह फल पेड़ में लगे-लगे
कभी सड़ता नहीं, कीड़े नहीं पड़ते,
घुनता नहीं।
कोई पशु-पंक्षी
बानर, कबूतर, तोता
आदि

इस फल को हानि नहीं
पहुँचा पाते।
यही कारण है।
मंगल कार्यारम्भ
देवार्चना
गुरु उपासना में
यही फल अर्पित किया जाता ।
प्रसाद वितरण में प्रमुख रूप से
यही फल दिया जाता।
इस खाद्य फल में पेय भी पाया जाता
नारियल का पानी विटामिन
से भरपूर होता है।
विशेषता का मुख्य कारण
आवरण मजबूत होता है
नारियल पर
कीट संक्रमण
नहीं होता
अतः कभी भी
कीटनाशक छिड़काव
की जरूरत नहीं पड़ती।
किन्तु वहीं अंगूर आदि पर
कीट संक्रमण शीघ्रता से होता
अतः कीटनाशक का जहरीला

प्रभाव छिड़का जाता है
फलस्वरूप अँगूर
अपनी शुद्धता खो देता है। शुद्धता के लिए
सुरक्षा कवच/सुरक्षा च्रक/आवरण मजबूत
होना चाहिए।
बरसा, सर्दी, गर्मी
सभी मौसम
अपने ऊपर सहने वाला
यदि कोई फल है-
तो वह श्रीफल है।
नारियल है।
जो कष्ट सहकर भी समता धारण
कर उत्कृष्ट रहता
वह आदर का पात्र होता है।
मंगलफल श्रीफल
आदरणीय फल है।
आ-सभी ओर से
वरण-वरण करना/ग्रहण करना
प्राप्त करना
आवरण है
यह अर्थ भी
स्व अपेक्षाकृत
समुचित है।

बदरी फल/वेर
का आवरण कमजोर
होता बहुत जल्दी कीड़े पड़ते हैं।
सब्जियों में
बेगन का आवरण
कमजोर होता
कीड़े पड़ते है।
फलों में हर्र, वहेड़ा, आँवला
में कीडे नहीं पड़ते किन्तु पाकर ऊमर,
कठूमर बड, पीपल, गूलर,
अंजीर, आदि में
फल खोलो तो जीव
उड़ते नजर आते हैं।
जिन फलों का सुरक्षा कवच
आवरण कमजोर होता है।
उन में जीव पड़ने की
अधिक संभावना होती है।

⊡

भारत का प्रमुख
धान्य कोद्रव है।
इसे कौदों भी बोलते हैं।
इस अनाज की विशेषता है कि
अस्सी वर्ष तक यह
अनाज घुनता नहीं
यही कारण प्राचीन समय में
राज धान्य के रूप में मान्य था।
तथा किला की दीबार आदि,
भण्डार गृहों में सुरक्षित रहता था।
इसे भर दिया जाता था।
आपदा काल में धान्य का
उपयोग होता था।

⊡

पर्यावरण और आग

खेतों/वनों/जंगलों में
आग लगाना
पर्यावरण को क्षति पहुँचाना है।
नूतन पादप
औषधियों के रूप में
विभिन्न ऋतुओं में
उत्पन्न होते हैं।
किन्तु
वन विभाग
एवं
खेतिहर किसान
औषधि पादप की पहिचान कीए विना,
वन पत्रों में आग लगाते हैं
छोटे-छोटे पादपों में आग लग जाती ।
कुछ लपटों में झुलस जाते
अतः प्रतिवर्ष उत्पन्न होने वाले औषधि
पादप नष्ट हो जाते
वन को आग लगाने से बचाइए।

पतझड़ में आग न लगायें
पतझड़ जमीन को नम, और शीतल
बनाये रखते हैं।
पतझड़ के कारण
जमीन कम मात्रा में
गरम हो पाती है।
फलस्वरूप
धरती का पानी
कम सूखता, वाष्पीकरण कम होने से
पृथ्वी पानी का संरक्षण
करती रहती है।
वन में आग लगाना जल सकंट
लाना है।

⊡

प्रकृति प्रकृति की जननी

प्रकृति
प्रकृति की जननी है।
पर्यावरण
पर्यावरण का जनक है।
प्रकृति
पौधे उगाती
वृक्ष रचाती
फल सूख जाते
फल-फलियों के बीज
जमीन पर गिर जाते
पृथ्वी में बिखर जाते
प्रकृति में मिल जाते
पुनः उचित वातावरण पाकर
उग आते हैं।
बीज कौन बोता, कौन उगाता? कोई नहीं
प्रकृति बोती, प्रकृति उगाती
प्रकृति प्रकृति की जननी है।
मेरी दीक्षा के दिन

संस्कार आरोपण के समय
दूर्वा की स्थापना
मेरे मस्तक पर हुई
तब गुरुजी ने कहा–
जैसे दूर्वा जहाँ एक बार
उग जाती है
वहाँ सूखने पर भी बिना बोये पुनः
उग आती
वैसे ही आपकी आत्मा में
आरोपित संस्कार भी पुनः पुनः उगते रहें।
वनस्पति विज्ञान में वनस्पति के
लक्ष–लक्ष प्रकार हैं
जो स्वमेव ही उगती हैं।
मनुष्यों के पास
न तो उनके बीज, न उगाने की कला
बीज वनस्पति, जल वनस्पति
पत्र वनस्पति, थल वनस्पति
लता वनस्पति, नभ वनस्पति
पुष्प वनस्पति
कन्द वनस्पति
विभिन्नप्रकार की वनस्पति हैं
सम्मूर्च्छन वनस्पतियाँ
भी अनंत प्रकार की हैं

मनुष्य सिर्फ रक्षा कर सकता।
प्रकृति में सम्मिलित
पृथ्वी, जल, अग्नि
वायु, वनस्पति
यें जैविक तत्त्व हैं।
ये सभी सम्मूर्च्छन वनस्पति हैं।
अपने योग्य वातावरण को
पाकर जन्मते हैं।
प्रकृति स्वतः
ऐसी ऋतुओं को लाती है
जिस वातावरण को पाकर
वनस्पतियाँ पुनः उग सकें
प्रकृति प्रकृति का उपकार करती है।
मनुष्य यदि प्रकृति का रक्षक न बने
तो प्रकृति स्वयं प्रकृति की
रक्षा कर लेती है।
श्रेष्ठ प्रकृति
श्रेष्ठ पर्यावरण
श्रेष्ठ व्यक्ति
श्रेष्ठ वातावरण
विना पुण्य के नहीं
मिलते हैं।
भारत देश पुण्य देश है

जहाँ सब कुछ श्रेष्ठ है
भारत देश से
अन्य देश मैत्री स्थापित कर रहे।
ताकि भारत पानी दे
उन देशों में शुद्व पेयजल नहीं
भारत में गंगा, यमुना
सदा प्रवाहमान है

⊡

पर्यावरण और जीव जन्तु

यदि विश्व परिदृश्य से सिर्फ
मक्खियाँ ही गायब हो जायें,
तो मनुष्यों की भी सिर्फ चार वर्ष
ही उम्र बचेगी।
क्योंकि न मक्खियाँ होगी
न परागण होगा
ना पशु रह पायेंगे
और न मनुष्य ही बचेगा।
ऐल्बर्ट आइन्स्टाइन
के विचार वर्तमान विज्ञान को प्राप्त हैं।
भगवान महावीर ने **2550** वर्ष पूर्व कहा
"परस्परोपग्रहोजीवानाम्"
जीवों का परस्पर में उपकार होता है।
मानव को चाहिए
वह सर्व जगत के उपकार में
बुद्धि लगाये।
अपकार में नहीं।
संरक्षण में प्रज्ञा जोड़ें

विनाश में नहीं।
पर्यावरण में
मेधा दोड़ायें
दुराचरण में नहीं
आत्महित सम्पादन
का प्रमुख साधन शरीर है।
शरीर होने पर वचन होता है
तभी शब्द प्रयोग द्वारा
उपकार होता है।
सुवचन जीवों को हित सम्पादन में
प्रवृति कराते हैं।
कर्ण इन्द्रिय के माध्यम से
वचन आत्म कल्याण में जोड़ते हैं।
शेष इन्द्रियाँ भी उपकार रत हैं
बुद्धि परोपकार में लगे तो
आपके शरीर के अंग
स्वपर उपकारी हैं
उदाहरण तौर पर मैं
मेरी बुद्धि जीवदया
और करुणा के क्षेत्र लगी है वह
अंहिसा को मन से स्वीकारती है।
फलस्वरूप
मेरे हाथ से

मेरी कलम
चल रही
मेरा ज्ञान
आप तक आ रहा है
आपके द्वारा–
प्रत्यक्ष/परोक्ष रूप से
हमारा भला हो रहा
तो हम मानवीयता के तौर पर अपना
कर्तव्य निभा रहे
ज्ञान आपको बाँट रहे
जहाँ सूरज किरणें नहीं पहुँचती
वहाँ अपनी किरणें भेज देता
जहाँ किरणें न पहुँचे
वहाँ भी उष्मा और प्रकाश तो भेज
ही देता कितना उपकार है सूर्य का
पौद्‍गलिक भौतिक पर्यावरण एवं
जैविक पर्यावरण
हमारा उपकार करते हैं।
अचेतन इन्द्रियाँ
पुद्‍गल शरीर भी क्या
आत्मा का उपकार नहीं करते
अवश्य करते हैं।
जिनकें प्रज्ञा नहीं वे

पुद्गल भी जब उपकार करते हैं
तो प्रज्ञा पुरुष मानव को तो
नियम से स्वपर उपकारक
बुद्धि अपनाना चाहिए
पर्यावरण संरक्षण में
हमारी जनभागीदारी जरूरी है
जिन जीवों के
शरीर और वचन होते
उन्हीं जीवों के मन हो सकता तथा
शिक्षा-आलाप,
समझने की सुबुद्धि हो सकती
आप मानव हैं
आपके पास मन है
पवित्र मन उत्तम विचारों का जनक है।
उत्तम विचार सदाचार का द्वार
खोलते जहाँ-जहाँ आपका ज्ञानोपयोग
होगा
वहाँ-वहाँ आपकी गतिविधि
मनरूप से होगी।
गुण-दोष विचार करने में दक्ष
मानव मन स्व पर उपकार में कर चिंतन।।
मनुष्य तू बढ़ा महान है

⊡

पर्यावरण और सुख

पर्यावरण में सम्मिलित
ऐसे अनेक बाह्य कारण हैं
जिनकी उपस्थिति
हमें
प्रसन्नता से भर देती है।
जब हमारा मन पवित्र ज्ञान से
ओत-प्रोत हो
आत्म शांति का अनुभव
करना चाह रहा हो-
तथा
जीव दया, करुणाभाव भाव
क्षमा गुण से भरा हो
निर्लोभता, निर्भयता में
जीने तत्पर हो तो
तब पर्यावरण से सुख के झरने झरते हैं।

⊡

मैं पर्यावरण संरक्षक।

पर्यावरण संपोषक।
पर्यावरण उद्घोषक।
पर्यावरण चितंक।
पर्यावरण ज्ञापक।
पर्यावरण संबोधक।
पर्यावरण शिक्षक।
पर्यावरण साधक।
पर्यावरण आराधक।
पर्यावरण प्रेरक।
पर्यावरण लेखक।
पर्यावरण गायक।
पर्यावरण दायक।
पर्यावरण प्रेमी।
पर्यावरण क्षेमी।
पर्यावरण महाकवि
अहिंसा महाव्रती
सर्व जीव अनुग्रह कारी
स्वपर उपकारी

करुणाधारी
दिगम्बर सन्त।
पर्यावरण धरा, पौदनपुर
संजय गाँधी राष्ट्रीय उद्यान, मुंबई में
उपस्थित हूँ।
जहाँ मानव की कोई भी
गतिविधि नहीं चलती
वहाँ मेरी गति चलती है।
कलम चल रही
राष्ट्रहित में
संदेश लिख रही
चल कलम चल
राष्ट्र हित में चल
पर्यावरण महाकाव्य
के माध्यम से
सांस्कृतिक पर्यावरण
प्रस्तुत कर रहा हूँ।

⊡

प्रकृति के संदेश और संकेत

प्रकृति के संदेश और संकेत
नभ में
अस्तालचल की ओर
दिवसपति का जाना
संध्या की लालिमा छाना
दिशा–दिशाओं से
देश–देशान्तर से
पंछियों का पेड़ की ओर आना
शान्त भाव से रजनी बिताना
प्रातःकाल होते ही
अपने–अपने प्रयोजन अनुसार
भिन्न–भिन्न दिशाओं की ओर
उड़ जाना
प्रकृति का संदेश और संकेत
दोनों हैं हमारे लिए
घर/परिवार पेड़ की छाँव समझो
आओ, ठहरो, जाओ।
पंछी की तरह निष्पृह रहो। जीवन बिताओ।

प्रकृति की शिक्षाएँ

अमरकंटक में–
नर्मदा का उद्‌गम स्थल
मैंनें देखा–
आपने भी किसी नदी का मूल दृश्य देखा होगा
जहाँ से नदी उद्‌भूत हुई/ प्रकृट हुई
वहाँ बहुत पतली धारा है
किन्तु वही धारा अनवरत
बहती रहीं, बढ़ती रही
फलस्वरूप भेड़ाघाट जवलपुर में (म.प्र.) के धुआँ धार जलप्रपात बनगयी।
वही गुजरात प्रान्त के भरूच में आकर
विशाल रूप से
समुद्र में आकर समा गयी।
प्रकृति की शिक्षा
बड़े कार्य का प्रारंभ हमेशा छोटे से होता है।
अनवरत चलता रहे तो बूँद सागर। बने।

⊡

प्रकृति घड़ी

प्रकृति जगाती प्रकृति सुलाती
गाँव मे जब घड़ी नहीं होती थी
तब बिना अलार्म के
इंसान कैसे जागता था?
ब्रह्ममुहूर्त होते ही
पौ फटते ही
पंछी वृक्षों पर कलरव प्रारंभ कर देते
वसंत में कोयलें कूकने लगती
मनुष्य को पता पड़ जाता
कि जागरण का समय हो गया।
प्रकृति इंसान को जगाती है
"यदि इंसान प्रकृति मात्र से
सोना और जगाना सीख ले
तो मनुष्य अपने जीवन में
अनेक महान कार्य अल्प समय में
कर लेगा।"

⊡

प्रकृति माँ

प्रकृति माँ है
संस्कृति संतान।
अपनी संतान को
सँभालने माँ के पास
बहुत कुछ है।
तो प्रकृति माँ के पास
सब कुछ है
माँ तो सिर्फ दो-चार
संतान संभालती, प्रकृति माँ
सकल संसार की संतान को सदा सर्वत्र
संभालती रही है।
धन्य हो प्रकृति माँ।

⊡

प्रकृति में छिपा परमात्म रहस्य

खान में पड़ा
किट्टि कालिमा युक्त स्वर्ण पाषाण
खान से निकाला गया
आग पर तपाया गया
एक बार नहीं सोलह-सोलह तापों पर
तपकर सोना, शुद्ध हुआ
अब कभी अशुद्ध न होगा
लोहे की तरह जंग न खायेगा
उत्तम-उत्तम-अंग रमायेगा
जब शुद्ध हो जायेगा
वैसे ही तूँ... वैसे ही मैं
आत्मा से परमात्मा हो जायेंगे।

⊡

पर्यावरण और ताड़पत्रीय शास्त्र

पर्यावरण और ताड़पत्रीय शास्त्र
कर्नाटक, उड़ीसा, बिहार
उदयगिरी, खण्डगिरि के
जंगलों में ताड़वृक्षों की विपुलता है
वहाँ के ग्रामीण जन वनोपज के रूप में
इसे शुष्क पत्र रूप में प्राप्त करते
पुनः पानी में भिगोकर
सीधा-सरल कर लेते
एक विशेष आकार प्रदान कर देते।
जिस प्रकार बीड़ी बनाने बाले
तेन्दु के पत्र से बीड़ी बनाने की कला
जानते वैसे ही उड़ीसा,
कर्नाटक, केरल तमिल क्षेत्रों में
ताड़पत्रीय पुस्तक, शास्त्र बनाने तथा
लिपि करण की कला जानते है
यह पूर्णतः पर्यावरणीय
अहिंसा का सफल प्रयोग है।

⊡

कमण्डलु और पर्यावरण

प्राकृतिक रूप से उत्पन्न
वानस्पतिक फल
जो दक्षिण अफ्रीका आदि
समुद्री तटों पर वृक्षों में लगता है।
भारत में प्राप्त नारियल की तरह
यह फल वहाँ पाया जाता है।
इसकी भीतर में खाद्य भोज्य एवं तेल पदार्थ
निकाल लिया जाता है
पश्चात भारत आ जाता
भारतीय सन्तों में
विशेषरूप से श्रमण संस्कृति में यह प्रयुक्त
होता।
यह धातु नहीं।
यह अशुद्ध नहीं होता।
प्रकृति प्रदत्त होने से
मांगलिक होता है।
पूर्णतः लाभदायक होता है।

⊡

पर्यावरण और श्रमण उपकरण

दिगम्बर श्रमण
ऋषि, मुनि, संन्यासी
तपस्वी, संयमी, व्रती
योगी, साधु कहाते
दीक्षा के साथ
सर्व परिग्रह
घर/परिवार
त्याग कर जाते
संयम पालन हेतु
तीन उपकरण पाते
पिच्छि, कमण्डलु, शास्त्र
ये तीन उपकरण पर्यावरण से आते
जो पर्यावरण को क्षति पहुँचाये
बिना प्राप्त होते हैं।
मयूर पंखों से
रची जाने वाली
सुकुमार, सुन्दर, अरज ग्राहक,
मृदु, निर्भार

उक्त पाँच गुणधारी
मयूर पिच्छिका
एक मात्र दिगम्बर साधुओं
के हाथ में होती है–
जीवदया पालन का
सर्वोत्तम उपकरण
मयूर पिच्छिका में
सुन्दरता, मनमोहकता
इतनी कि नारायण श्री कृष्ण भी
अपने सिर पर मुकुट की कलगी में
धारण करें।
कोमलता मृदुता इतनी कि
आँख के भीतर घुमाने पर भी कष्ट न हो,
अरजता इतनी कि
धूलि ग्रहण न करे।
मयूर पंख कैसे आते?
कब आते?
कहाँ से आते?
मयूर भारत का राष्ट्रीय पक्षी है।
यह पंछी
श्रावण माह में
रक्षाबन्धन के समय
अपने शरीर से पंखों को

शरीर के खुजली होने के कारण
स्वतः छोड़ता है
इससे उसे कष्ट नहीं होता
नर्तन करते हुए ये पंख
उसके स्वतः गिर जाते हैं
जो वन प्रदेश में घूमने वाले
ग्रामीण लोग उठा लेते हैं
वन में यदि मयूर अधिक मात्रा में हैं
तो पंख भी अधिक मात्रा में उपलब्ध
हो जाते हैं।
ग्रामीणजन द्वारा संचित ये पंख
उनको यथोचित पारिश्रमिक प्रदान कर
गुरुभक्त श्रावकगण प्राप्त कर लेते हैं।
कुशल श्रावक/श्राविकाएँ
उन मयूर पंखों से रचित
सुन्दर सा उपकरण बनाते हैं
जो पिच्छिका कहलाता
इसे साधुजन को
विनय भाव से समर्पित करते
साधुगण एकवर्ष तक
उस उपकरण से जीवों की रक्षा करते
संयम उपकरण से दया पालते हैं।
यह प्रकृति की देन...

⊡

परिवर्तनशीला प्रकृति

प्रकृति परिवर्तनशीला है
सो यह पर्याय धर्मा
उत्पाद, व्यय का परिचय है
नैसर्गिक परिवर्तन
प्रकृति का धर्म है
जो अपरिहारीय है
किन्तु प्रकृति परिर्वतनीया भी है
मानवीय परिवर्तन
ने प्रकृति को
दुष्परिवर्तनीय बनाया
परिवर्तन नहीं, दुष्परिवर्तन किया
यह प्राकृतिक हानि है,
जो हमें ही उठानी है।
प्रकृति अपरिवर्तनीया
तभी तो ध्रुव है, नित्य है
शाश्वत है, सत्य है
अबाध्य है,
अबध्य है,

द्रव्यदृष्टि से निहारो
तो सही
प्रकृति की ध्रुवता
नित्यता
शाश्वत सत्ता को
स्वीकारो तो सही
"**उत्पाद व्यय ध्रौव्य युक्तं सत्**"
तथा
"**सत् द्रव्य लक्षण**"
चरितार्थ हो पायेगा
प्राकृतिक
सौन्दर्य विना
सृष्टि का श्रृंगार
अधूरा है।
ऊँची इमारतें उँचे-मकान
विशाल भवन तभी सुन्दर लगते हैं
जबकि
हरी-भरी प्रकृति हो
हरियाली हो
तभी खुशहाली होती है।

⊡

प्राकृतिक चिकित्सा

देह में दाह हो, या हो
तन में अनल सी तपन
कौन करता शमन
शीतल सरसी का
शीतल नीर समीर
मलयागिरि चन्दन
का शीतल द्रव लेपन
खश चूर्ण विलेपन
कमल पत्र की शीतल पवन
कर्पूर मिश्रित जल कणों का
अभिसिंचिन
या केल पौध के मध्य दल का
शीतल संस्तर स्पर्शन
निश्चित है शीतलता होना
उष्णता खोना
पित्त और चित्त का
शांत होना
जीव में आयी

व्याधि विकृति
को प्रकृति शमन करती
अतः
चिकित्सा प्रणाली
प्राकृतिक चिकित्सा
को नमन करती है।

⊡

प्रकृति माँ की गोद

वे सुध को सुध लाती
प्रकृति माँ कहती।
प्रकृति
अच्छी हो
तो व्यक्ति
अच्छा होता है।
प्रकृति बुरी हो तो
व्यक्ति बुरा होता है।
प्रकृति अच्छी तो
व्यक्ति स्वस्थ होता है
प्रकृति बुरी हो तो
व्यक्ति अस्वस्थ होता
जैसी प्रकृति वैसी कृति

मति, गति द्रव्य प्रकृति
क्षेत्र प्रकृति
काल प्रकृति
भाव प्रकृति
क्षमा जीव द्रव्य की प्रकृति है
क्रोध जीव की विकृति है
प्रकृति में गुण बसते ही
गुणी बसते
विकृति में दोष बसते
विकृति में दोष उपजाते
प्रकृति के नीर ने
विकृति की आग को
सदा शमन किया है
प्रकृति के समीर ने
व्यक्ति के अशान्त मन को
अस्वस्थ तन को
शान्त स्वस्थ किया।
चलो प्रकृति माँ की गोद
में खेलें।

⊡

प्रकृति शील है
स्वभाव है
नीम की प्रकृति
कड़वी
आम की प्रकृति
मीठी
स्वभाव से होती है
प्रकृति में मधुरता और
सुन्दरता सहज होती है।
व्यक्ति रचित भी
प्रकृति
के समक्ष
विकृति आती ही कहाँ।
दिवसपति के समक्ष
रजनी आती ही कहाँ
वीतराग में रति नहीं
जहाँ रति है वहाँ प्रकृति कहाँ?
पर की प्रकृति
मेरे भले में कारण
मेरी प्रकृति एवं
मेरी प्रवृत्ति

मेरी उन्नति में
कारण है।
प्रकृति का अर्थ
स्वभाव तो होता ही है
किन्तु
स्वभाव के भेद
एक, दो, नहीं
इक्कीस हैं–
उनमें विभाव स्वभाव भी है
यदि क्षमा जीव का स्वभाव है,
तो क्रोध भी जीव का
ही स्वभाव है
जल की उष्णता समान
विभाव स्वभाव
जल उष्ण
कब तक रहेगा?
जब तक
उष्णता कारक
निमित्तों के सन्निधान में है।
उपादान में उष्णता–नैमितिक भाव है।
सो निमित्त पर है
पर कब तक टिकेगा
पर निमित्त तो संयोग है।
जहाँ संयोग वहाँ वियोग
जिसका संयोग उसका वियोग

⊡

उत्तम प्रकृति

ख्याति, पूजा, लाभ
से परे
आत्मीय परिणति
का होना
उत्तम प्रकृति है।
इसीलिए तो
आगम शास्त्रों में
क्षमा के पूर्व
उत्तम विशेषण आया
पूर्वाचार्यों ने गाया
रहस्य प्रकटाया
सत्य तथ्य बताया
विशेषण ही तो
विशेषता दर्शाता
गुणवत्ता झलकाता
जैसे- मीठा दूध
शीतल पवन
घनी छाँव

अपना गाँव
स्वच्छ भारत
स्वस्थ्य भारत
विशेष्य के पूर्व
विशेषण भाषा की दृष्टि में उपसर्ग
सरीखे लगते हैं
पर भावों में चमत्कार लाते हैं।
प्रकृति हमारी
जीवन साथी है।
विचार प्रकृति
आचार प्रकृति का
निर्माण करती है।
विचार तो
सागर मे उठने वाली
तरंग के समान
होते हैं।

⊡

मानव तन
जिन परमाणु-स्कन्धों से
रचा है
वे परमाणु
इसी प्रकृति में
इसी पर्यावरण में
उपस्थित हैं
संरक्षित हैं
प्रकृति माँ की
सुन्दर सलोनी गोद में
माँ की ओढनी में
शिशु निश्चिन्त, स्वस्थ
निर्भय-सानन्दता महसूस
करता
प्रकृति माँ की गोद
अभय प्रदायिनी है।
सुविचार का
जलाभिषिंचन ही तो
आचार के पौधे को
संपोषित करता है

पल्लवित, पुष्पित
फलित करता
विचार विन
आचार कहाँ
जल है तो फसल है
जल है तो हरियाली है
वंसत आता है
प्रकृति मुस्कराती है
संत आता है तो
संस्कृति
मुस्कराती है
जहाँ प्रकृति
और पर्यावरण नहीं
वहाँ संस्कृति और
सदाचरण नहीं
पर्यावरण प्रकृति रक्षक है
सदाचरण संस्कृति संरक्षक है।

⊡

प्रकृति अस्तित्व

अस्ति है
सत् यह
अस्तित्व का बोधक
हाँ, है का संबोधक
उपस्थिति का घोषक
सद्भाव का सुबोधक
अभाव भाव का
सुबोधक
अस्ति का भाव
की अस्तित्व है
प्रकृति
अस्ति सर्वथा रूप है।
अस्तित्व रूप भी है।
अतीत्त सर्वया
अस्ति नहीं
वह नास्ति रूप है
न में हाँ
हाँ में न भी होता है।

काली मिट्टी का
प्राकृतिक
चिकित्सा में
महत्त्वपूर्ण स्थान है
अहं योगदान है
काली है तो क्या हुआ
गुण वाली है।
तन के भीतर की
उष्णता को
अपने में भरने का
काम काली मिट्टि करती
उष्णता हरती
उष्णता का निवारण ही
शीतलता की कारण है।
सो
मेरे गुरु ने
मरे पेट पर
काली माटी का चंदन सा
शीतल लेप लगाया
चंदन शीतलता देता है।

पर माटी
तपन ग्रहण करती है।
चंदन बाहर से शीतलता प्रदान करता
मिट्टी भीतर से
गर्मी खींचकर
अपने मे समेट लेती
माटी का
एक लेप
एक बार ही
प्रयोग में लाते
क्योंकि
परोपकार में
स्वयं को
समर्पित होना
पड़ता है

⊡

लू उतारने की विधि

आम का चमत्कार
लू का लगना
ज्येष्ठ मास में हो ही जाता है
प्रकृति के पास
विकृति का निवारण करना ही
व्यक्ति का उपचार है।
सो
कच्चे/हरे आम
को आग में/आग पर
गरमकर। उबालकर
उसका रस निचोड़कर
जब तन पर लेप लगाते
तो लू लगना तत्काल शांत होता।
दैहिक रोग
पलायन होता है
प्रकृति में औषधि भरपूर है। औषधि
घी में, कपूर मिलाकर
बार-बार जलघृत मन्थन किया

महामन्त्र की एक माला तो हो।
एक सौ ग्यारह बार मन्थन तो करें।
शीतल द्रवलेप
उष्णता खोगा।
प्रकृति भी
द्रव्य
क्षेत्र
काल
भाव
अनुसारिणी होती है
जो जीवों के
पाप-पुण्यानुधारिणी सी होती।
नरक की प्रकृति दुख रूप
स्वर्ग की प्रकृति सुखरूप
सो पाप-पुण्य फलदायी प्रकृति।

⊡

प्रदूषण समस्या नहीं
समस्या हम हैं
समाधान हम हैं।

⊡

अन्तःकरण प्रदूषित
हुए बिना
पर्यावरण प्रदूषित
होता नहीं
अन्तःकरण शुद्ध हुए विना
पर्यावरण शुद्ध होता नहीं
हमें अन्तःकरण शुद्ध करने
मानव समाज में फैले
पर्यावरण सम्बन्धी
अज्ञान अंधकार को
को हटाना जरूरी है।
पर्यावरण सम्बन्धी शिक्षा, महत्त्व लाभ
आवश्यकता
एवं
अनिवार्यता
का कर्तव्य बोध हो।
हमें
अपनी रक्षा करना है
तो अपनी प्रकृति माँ
और पर्यावरण की
रक्षा करना ही चाहिए।
हम एक सौ चालीस कोटि
जनसंख्या वाले भारतीय मनुष्य

यदि समाधान न खोज पायेंगे
तो क्या
देवता समाधान
लेकर आयेंगे
प्रदूषण हम फैलायेंगे
समाधान को अन्य कोई?
ऐसा नहीं।
हम ही समस्या, हम ही समाधान।

⊡

पर्यावरण प्रदूषण

पर्यावरण प्रदूषण
एक गम्भीर समस्या है
इसका समाधान भी
बड़ी गम्भीरता से
निकालना होगा।
क्योंकि ऐसी
कोई समस्या नहीं
जिसका
आज तक/अब तक
समाधान न हुआ हो
हाँ पर्यावरण प्रदूषण
का समाधान नहीं मिला।
इसका भी
समाधान मिलता अवश्य मिलता,
खोजते बैठते, तब
समाधान खोजा ही कब?
समाधान की
सही दिशा

सही दशा
तय करो
प्रदूषण कौन करता?
मानव
समाधान भी
मानव है।
प्रदूषण करने वाले हम ही
निराकरण करने वाले हम ही है।
पर्यावरण
पेड़–पौधों
पर्वत–झरनों
नदियों, सागरों
वन–उपवनों
का
समुदाय मात्र नहीं
क्योंकि वह
द्रश्य पर्यावरण है।
अदृश्य पर्यावरण तो
अदृश्य अन्तःकरण है
अन्तःकरण पवित्र है
तो पर्यावरण पवित्र है।
पवित्र
अन्तःकरण

के अभाव में
पवित्र पर्यावरण
का दर्शन
सृष्टि पर नहीं हो सकता
दूषित अन्तः करण
पर्यावरण को दूषित
किये बिना
कब रहता।
जैसा अन्तः करण
वैसा पर्यावरण

⊡

पर्यावरण

हमको पेड़ लगाना है।
पर्यावरण बचाना है।
पर्यावरण विशुद्ध कहाँ?
पानी-पवन पवित्र जहाँ।
नदियाँ झरनें बहें जहाँ।
झुण्ड हिरण के रहें जहाँ।।
पंछी कलरव नाद करें,
प्यार भरा संवाद करें।।
ऊँचे-उँचे वृक्ष जहाँ,
फल देने को नम्र वहाँ,
वन का दृश्य सुहाना है।
पर्यावरण बचाना है।।१।।

हमको पेड़ लगाना है
पर्यावरण बचाना है।
हरे-भरे यह सुंदर वन,
स्वस्थ बनाते हैं, तन-मन।।
प्राणवायु दाता यह वन,

जीवनदाता सुंदर वन।।
वन है तो हरियाली है,
वन है तो दिवाली है।।
वन है तो सब तरुपतियाँ,
वन है तो सब औषधियाँ।।
वन को और बढ़ाना है,
पर्यावरण बचाना है।।२।

हमको पेड़ लगाना है
पर्यावरण बचाना है।
वन से बादल आते हैं,
बादल जल बरषाते हैं।।
जल पर्वत पर गिरता है,
तब ही झरना झरता है।।
जड़ी-बूटियों से मिलकर
शुद्ध रसायन में घुलकर।।
जल नदियों में आता है,
सर्वोषधियाँ लाता है।
औषधि वृक्ष उगाना है,
पर्यावरण बचाना है।।३।।

हमको पेड़ लगाना है।
पर्यावरण बचाना है।

सुन्दर-सुन्दर, सुन्दर वन,
रंग-बिरंगे सुन्दर वन।।
छाया वाले सुन्दर वन,
जल-फल देते सुन्दर वन।।
ये निसर्ग परिचायक वन,
जीवों को सुखदायक वन।।
तीर्थंकर के दीक्षा वन,
ऐसे वन का अभिनन्दन।।
नाता बहुत पुराना है,
पर्यावरण बचाना है।।४।।

हमको पेड़ लगाना है
पर्यावरण बचाना है।
वृक्षों से रचता है वन,
वृक्ष बचाते हैं जीवन।
एक वृक्ष सौ पुत्र कहो,
सदा वृक्ष की छाँव रहो।।
वृक्षो के फल खाना है,
फल के रस भी पीना है।।
सदा वृक्ष का ज्ञान रखो,
जीव दया का भाव रखो।।
कटते वृक्ष बचाना है,
पर्यावरण बचाना है।।५

हमको पेड़ लगाना है
पर्यावरण बचाना है।
वन को देखें, जानें हम,
कितना प्यारा वन मधुवन।।
स्वच्छ हरित सम्मेद शिखर,
यहीं रहो बस जीवन भर।।
वन जाते सो बन पाते,
वन में निज भगवान पाते।।
तीर्थंकर को प्यारा वन,
सीताराम लखन का वन।।
एक ही मेरा गाना है,
पर्यावरण बचाना है।।६।

हमको पेड़ लगाना है
पर्यावरण बचाना है।
घने-घने जो जंगल हैं,
अखिल विश्व को मंगल हैं।
आत्मशांति के श्रेष्ठ सदन,
शून्य, शांत, नीरव, निर्जन।।
इमली, पीपल, बैरी वन,
तिलक, अशोक, बहेरे वन।।
बरगद, अक्षरोट, जामुन,
वृक्षों से रचता है वन।।

धरती स्वर्ग बनाना है,
पर्यावरण बचाना है ।।७।।

हमको पेड़ लगाना है
पर्यावरण बचाना है।
केला, आम, कदम्ब यहाँ,
सेब, संतरा, निम्ब यहाँ।।
दिखते ताल, तमाल यहाँ
राल, रसाल, सु–साल यहाँ।।
सप्तपर्ण सागौन खड़े,
ऊँचे- ऊँचे बहुत बड़े।।
पथिकों को पाथेय मिले,
वन स्वागत पा ध्येय मिले।।
वन को मित्र बनाना है।
पर्यावरण बचाना है।।८०।।

हमको पेड़ लगाना है
पर्यावरण बचाना है।
हर्र बहेरा यहाँ फला,
मिला आँवला लो त्रिफला,
अजवायन, अजमौद यहाँ,
मैंथीदाना, सौंठ यहाँ,
लौंग, इला, सब चव्य जहाँ,

बड़ी सुपारी, पान वहाँ।।
श्वेत, लाल नाना चंदन,
करते सबका अभिनंदन ।।
छाँव-छाँव में आना है,
पर्यावरण बचाना है।।९।।

हमको पेड़ लगाना है
पर्यावरण बचाना है।
देखो-देखो श्यामलता,
ऐसे फलती प्रेमलता।।
मेढासिंगी, बेल जहाँ।
मैथी, सेंम, चिरोल जहाँ।
जहाँ रसीले ईख खड़े?,
काजू किसमिस दाख पड़े।।
वृक्ष सभी ये मन भावन,
जहाँ वृक्ष वह नंदनवन।।
वन का साथ निभाना है,
पर्यावरण बचाना है।।१०।।

हमको पेड़ लगाना है
पर्यावरण बचाना है।
नंदी, कौह, वकौली के,
चम्पा और चमेली के।।

कुन्द-कुन्द, मचकुन्द यहाँ,
तन-मन को आनंद यहाँ।।
पारिजात की गंध यहाँ,
कमल गुलाब-सुगंध यहाँ।।
भोजपत्र के प्यारे वन,
लिखने का करता है मन।।
ऐसे वृक्ष लगाना है।
पर्यावरण बचाना है।।११।।

हमको पेड़ लगाना है
पर्यावरण बचाना है।
कहीं खजूर, बिजौरा वन,
नारंगी ने मोहा मन।।
पुरुष प्रमाण अनार खड़े?,
फल देने तैयार खड़े ।।
वृक्ष नारियल फल देते,
भोजन देते जल देते।।
देखो-सीता! सुन्दर वन,
बोले भैया-राम-लखन।।
राम राज्य फिर लाना है,
पर्यावरण बचाना है।।१२।।

हमको पेड़ लगाना है।
पर्यावरण बचाना है।
वन हैं तो नदियाँ-झरना,

वन हैं तो गंगा-यमुना।।
यही सुरक्षा तंत्र यहाँ,
आत्म साधना मंत्र यहाँ,
वन हैं तो वन जीव अरे,
जंगल होंगे हरे-भरे।।
वन हैं तो वनवासी हैं
वन हैं तो संन्यासी हैं।।
जीवन स्वस्थ बनाना है।
पर्यावरण बचाना है।।१३।।

⊡

अपना गाँव

अपनेपन का अहसास करता
अपना गाँव।
भाई-चारा खूब निभाता,
अपना गाँव।
खाने से पहले आने वालों को भोजन
खिलाता,
अपना गाँव।
घर के दुधारु पशुओं को सानी बनाता,
अपना गाँव।
इंसान की तो बात ही क्या
पशुओं को भी प्रेम से पानी पिलाता
अपना गाँव।
भाषा नहीं, भाव समझता
अपना गाँव।
पैसा नहीं, प्यार लुटाता
अपना गाँव।
पढ़ा-लिखा जरुर कम है
पर आचार-विचार सही

माटी–सा मट–मैला तन
पर सबके चेहरे पर कितना भोलापन
भोलेपन का भान कराता
अपना गाँव।
एक घर एक चूल्हा
नियम निभाता अपना गाँव
निभो–निभाओ
पाठ सिखाता
अपना गाँव।

⊡

पर्यावरण

पर्यावरण
दो शब्दों का मेल
परि + आवरण
चारों ओर घेरा
हमारे चारों ओर जो है
वह पर्यावरण है
हम जहाँ रहते
उस सृष्टि समूह को
लोक कहते
लोक रचना का आधार
ईश्वरीय सत्ता
अथवा
शेष नाग की वलवत्ता नहीं
अपितु प्रकृति की अकृत्रिमता
एवं
पर्यावरण की महत्ता है–
पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु
वनस्पति, यह जैविक शक्तियाँ

सूक्ष्म–स्थूल दोनों तरह की हैं।
अनंत आकाश में
इनका अस्तित्व
सदा से था, है, रहेगा
यही शाश्वत सत्ता की सैद्धान्तिक
वस्तु व्यवस्था है।
पर्यावरण के बिना
सृष्टि और जीवन
दोनों असंभव हैं।
हमारे चारों ओर कोई है
तो हम भी किसी की ओर हैं
अर्थात हम जिसकी ओर हैं
उसके लिए हम ही पर्यावरण हैं।
भगवान महावीर उवाच
''**परस्परोपग्रहोजीवानाम्**''
सभी जीव परस्पर में उपकार करें।
उपकार में सृजन
संरक्षण
सह अस्तित्व की भावना
और साधना परिलक्षित है।
यह पर्यावरण संरक्षण का आगम सूत्र है।
निरावरण प्रकृति का संरक्षण
अनादि से पर्यावरण ने ही तो किया।

पर्यावरण के बिना
क्या यह विश्व
एक क्षण
टिक सकेगा?
नहीं...नहीं...नहीं....।
हम जहाँ भी हैं-
गाँव-गाँव
नगर-नगर
शहर-शहर
प्रदेश-प्रदेश
देश-देश
स्वदेश-विदेश में
धरती से नभ तक
जल, थल, वायु में
जब भी, जहाँ भी, हम होते हैं
श्वास लेते हैं
तब, वहाँ हमारा जीवन साथी
जीवन दाता पर्यावरण
हमारे साथ होता है।
जहाँ वायु वहाँ जीवन।
जीवन के लिए पर्यावरण
और
पर्यावरण के लिए
जीवन जरूरी है।

⊡

लोक रचना

जिन द्रव्यों से, यह लोक रचा
वे जीव, अजीव द्वि जातीय द्रव्य
अपने भेद-प्रभेदों सहित
लोक में सदा सर्वत्र
व्याप रहे है।
लोक को चारों ओर से घेरे हुए
वायु के आवरण हैं
पहला घनीभूत वायु-ठोस वायु का घेरा
दूसरा ठोस वायु सहित जल का
तीसरा सामान्य वायुवलय।
यह वायुचक्र
इस पृथ्वी को सर्व ओर से वेष्ठित किये है।
वायु अनंत क्षमताओं,
जो सृष्टि समुदाय को
अपने आँचल में छुपाये
और स्वयं
निर्मल अनंत आकाश में
समाहित

और आकाश ठहरा
स्वावलम्बी जो
स्वयं-स्वयं आधार स्वयं-स्वयं आधेय
प्रतिष्ठित हो अपनी
प्रतिष्ठा/सत्ता
अनादि से प्रतिष्ठित
किए हैं
"वत्थु सहावो धम्मो"
वस्तु का स्वभाव
निजभाव, निजगुण
वस्तु का धर्म है
वस्तु का धर्म ही
वस्तु का जीवन है।
जैसे-अग्नि का स्वभाव निजगुण उष्णता है।
उष्णता आग का जीवन है।
अग्नि पर जल डालना
अग्नि के गुण का नाशक है।
अग्नि सरंक्षण के लिए
जल से बचाना
आवश्यक है।
पानी की बूँद
अग्नि के जीवन पर
खतरा...

अग्नि की चिंगारी
वन जीवन पर
खतरा है
हम खतरा पैदा कर
खतरनाक सिद्ध न हों
अपितु संरक्षण देकर
परम संरक्षक सिद्ध हों
यही मानवीयता है।

⊡

परिवर्तन प्रकृति का नियम है।
किन्तु यह नियम गुणों में है,
पर्यायों में भी है
द्रव्यों में नहीं
द्रव्य शाश्वत होता
द्रव्य में समाहित गुणों में परिणमन होना
पर्याय का उत्पाद, विनाश है
द्रव्य सदा ध्रौण्य रूप में
स्थिर रहता।
स्थिरता में आनंद है।

⊡

शाश्वत सृष्टि की शाश्वता
शाश्वत सत्ता का पालन करना
हमारा धर्म/कर्त्तव्य/दायित्व है।

प्रकृति में खेलें, खिलें, रहें, जियें
यह बहुत अच्छी बात है।
किन्तु प्रकृति के साथ
खिलवाड़ न करें।
"जिस थाली में खाना
उस में छेद करना"
अच्छी बात नहीं।
आओ समझो!
प्रकृति ने आपके
स्वागत में
धरती को बिछौना
और अम्बर को ओढ़ना बनाया है।
पीने के लिए गंगाजल,
नहाने के लिए काशीतल
खाने के लिए लहराती फसलें और
षट्ऋतु के फल
अपने बगीचा रूपी थाली में
सँजोये...
माँ की तरह वाट जोह रही
आपकी प्रतीक्षा में
प्रकृति माँ आपकी

⊡

मैंने नदी किनारे गिरी–पड़ी हुई
चट्टानों को देखा।
तभी बहती हुई नदी से कहा–
हे बहिन नही!
तूने इन मजबूत, कठोर चट्टानों को
नीचे क्यों गिरा दिया?
नदी संयता स्वर में बोली–
भैया! गिराने की बात तो कोसों दूर रही,
"मैंने तो इन्हें छुआ भी नहीं"
मैं तो अपनी तटीय सीमाओं में बँधी
सागर में मिलने जा रही थी।
तभी मानी कठोर चट्टानों के
अहं पद तले दबे
सिसकते हुए
मलाई सी माटी के मृदु कणों ने
शर्करा सरीखे रेतीले दानों ने
मुझ से पूछा–बहिन कहाँ जा रही हो?
मैंने कहा–सागर में मिलने।
मृदु माटी मुलायम कणों ने कहा–
मुझे भी ले चलो–

मैंने प्यार भरी थप-थपी दी,
दुलारा, पुचकारा
उन्हें मेरा प्यार भाया
माटी मुझमें घुल गयी,
रेती मुझमें मिल गयी।
चट्टान स्वतः नीचे गिर गयी।

⊡

पर्यावरण का सम्बन्ध
प्रकृति/ विश्व के कण-कण
एवं
जीवन के क्षण-क्षण से है।
प्रकृति पहली जन्मी या पर्यावरण?
यह तो ठीक वैसा ही प्रश्न है-
जैसे सूरज पहले उगा कि उसक प्रकाश
पहले हुआ
अथवा
माँ का जन्म पहले हुआ या शिशु का
जन्म?
सूर्योदय के साथ प्रकाश आता है।
शिशु के जन्म होने पर गर्भवती स्त्री
माँ संज्ञा पाती है।
अतः माँ और बेटे का जन्म

एक समय हुआ
समय भेद नहीं
वैसे–प्रकृति और पर्यावरण में
समय भेद और
स्थान भेद नहीं।
प्रकृति जहाँ–पर्यावरण वहाँ
पर्यावरण जहाँ–प्रकृति वहाँ।
प्रकृति में जिओ
प्रकृति में रहो
प्रकृति का आनंद लो
प्रकृति में रहना–माँ की गोद में रहना है।
प्रकृति के सभी घटक
पर्यावरण के अभिन्न अंग है।
प्रकृति माँ है,
पर्यावरण उसकी संतान।
प्राकृतिक सौन्दर्य, माँ का सौन्दर्य है।
माँ की सुन्दरता के आँचल में
पर्यावरण रूप सन्तान
का भविष्य सुनिश्चित है।
बरसात आती,
हरियाली छाती,
प्रकृति मुस्कराती हैं
ज्यों माँ के आँचल में

शिशु खेल रहे हैं।
जो आनन्द माँ अपने आँचल में शिशु को
क्रीडा करते देख लेती, तब पाती।
वही आनन्द तो आज प्रकृति माँ ले रही।
आज मैं प्रकृति माँ को
अपनी माँ की तरह
मुस्कराते देख
आनंदित हूँ!
मेरा जीवन
मेरी माँ का आनंद है।
मुझे मेरी माँ ने जैसा
रचा है वैसा ही रहने दो
मेरी माँ मेरी प्रकृति
प्रकृति का नजारा
प्रकृति में रहना–माँ की गोद में रहना है।

⊡

प्रकृति के घटक

पर्यावरण
निसर्ग परिचायक
प्रकृति स्वरूपा है।
पर्यावरण
स्पर्श
रस गन्ध रूपा है।
तथा जैविक पर्यावरण
ज्ञान-दर्शन स्वरूपा भी
अरस अगंध अरूपा भी है।
जैविक पर्यावरण
अजैविक पर्यावरण
दोनों की शुद्धता-रखना
हमार मानवीय
प्रतिबद्धता है।
प्राणी हो या पदार्थ
दोनों
अपने स्वभाव में
शोभा पाते हैं।

प्राणी जगत
चैतन्य शक्ति समन्न
ज्ञानादि गुण प्रसन्न है।
पदार्थ अचेतन
अजीव तत्व
पुद्गल द्रव्य हैं।
हमारे चारों ओर जो-जो है
वह सब द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव,चतुष्टय
पर्यावरण है।
योग्य उपादान के लिए
योग्य निमित्त मिलें तो क्या
उपादान सफल न होगा?
अवश्य ही
पाषाण खण्ड में
किट्टिकालिमायुक्त
स्वर्ण क्या
स्वर्णकार द्वारा
बार-बार तपाये जाने पर
शुद्ध स्वर्णत्व को
प्राप्त नहीं होता?
अवश्य ही होता है।
वैसे ही आत्मा भी योग्य द्रव्य,
क्षेत्र, काल, भाव को पाकर

परमात्म तत्त्व को
प्रकट कर लेता है।
यही पर्यावरण का साफल्य है।
नदियों में कल-कल
पंछियों में-कलरव
कितना सुहाना लगता।
कोयल का कुहुकना
चिड़िया का चहकना
बगिया का महकना
कितना सुहाना लगता?
क्योंकि यह प्रकृति में
खिला पर्यावरण

⊡

जैव विविधता का आधार

पर्यावरण
पर्यावरण का ह्रास
जैव विविधता का ह्रास
पृथ्वी पर पाये जाने वाले
पेड़., पौधे, वनस्पति
जीव, जन्तु, प्राणियों
जल, थल, नभ चरजीवोंयों के
ह्रास
मानव संख्या का ह्रास
मानवीयता का ह्रास
जबकि पर्यावरण का विकास
जीवों के आवास,
पर्यटन,
औषधीय उपयोग का साथ
पृथ्वी जल के सौन्दर्य को बढ़ाने
में अपना देता योगदान
यही है प्राकृतिक वरदान

⊡

पर्यावरण एवं मानव जीवन

पर्यावरण से
जैव विविधता
जैव विविधता से
प्रत्यक्ष, परोक्ष लाभ
मानव समाज को प्राप्त
वनस्पतियाँ से भोजन,
नदियों से जल,
पर्वतों से खनिज
औषधि वृक्षों से औषधियाँ
मांगलिक मंगलाचार
एवं जीवन आधार
की आवश्यक आवश्यकताएँ
पर्यावरण पूरी करता है
मानवीय स्वार्थ एवं लालच
को पूरा नहीं कर सकता।।

⊡

पर्यावरण एवं औषधियाँ

पर्यावरण में
प्राकृतिक रूप से चिकित्सीय
पादप, वनस्पतियाँ हैं
जो औषधिगुण के
मुख्य स्रोत हैं।
अखिल विश्व में
पादपों की प्रचुरता है
भारतवासियों के आरोग्य हेतु
भारतीय पादप
भारतीय औषधियाँ
आशानुरूप लाभ पहुचाते है
भारतीय आयुर्वेदिक चिकित्सा
की आधार पर्यावरण है।

⊡

हमारी खुशी, तुम्हारी खुशी बनें।
हमारा दर्द, तुम्हारा दर्द न बने।
खुशियाँ बाँटो
खुशियाँ मिलेगी।
सिखाता पर्यावरण

⊡

आपका आभामण्डल
आप से
पहले मिलता है

⊡

कभी
ढाल बनकर
कभी
तलवार बनकर है।

⊡

तीर्थंकर के
गर्भ जन्म
भवन में
दीक्षा
ज्ञान
निर्वाण
वन में

⊡

पर्यावरण के लिए

अंहिसा का आचरण
पर्यावरण के लिए
धर्म का धारण
पर्यावरण के लिए
वात्सल्य का वातावरण
पर्यावरण के लिए
तीर्थंकर अवतरण
पर्यावरण के लिए
वसंत का आमंत्रण
पर्यावरण के लिए
संत का समर्पण
पर्यावरण के लिए
संयम का ग्रहण
पर्यावरण के लिए
जीवों का रक्षण पर्यावरण के लिए
प्रकृति का संरक्षण पर्यावरण के लिए
श्रावक हो या श्रमण
पर्यावरण के लिए

⊡

पर्यावरण कहाँ?

हिमालय की ऊँचाई में क्या?
पर्यावरण
गंगा की तलाई में क्या?
पर्यावरण
सागर की गहरायी में क्या?
पर्यावरण के
अम्बर की विशालता में क्या?
पर्यावरण के लिए
दिशाओं की धवलता में क्या?
पर्यावरण
पृथ्वी की गोद में क्या?
पर्यावरण
सूरज की रोशनी में
पर्यावरण
चंद्रमा की चाँदनी मे
पर्यावरण

⊡

हरी-हरी घास
वनस्पति जीव हैं
उसमें भी जान है
इन्द्रिय, बल, आयु
स्वासोच्छ्वास प्राण हैं
ठीक अपने समान हैं।
यदि हम इंसान हैं
तो वह भी भावि भगवान हैं।
आत्मा दोनों में समान हैं,
प्रत्येक जीव शक्ति रूप भगवान हैं।
हमारा वर्तमान उसका भविष्य बने
यह प्रार्थना, अरमान है।
उसका वर्तमान हमारा भविष्य बने
यह हमारा अज्ञान है। जीव दया समाधान
है। भारत धर्म प्रधान है।

⊡

हरी–हरी घास
गौवंश के, चरने के लिए है
आपको, कुचलने के लिए नहीं।
हरिण, गाय, भैंस, आदि पशुओं का
घास ही भोजन है।
भोजन पर चला नहीं जाता
भोजन कुचला नहीं जाता
भोजन पर चलना–भोजन को कुचलना
दण्ड नहीं, अनर्थदण्ड है
अपराध है
यह ज्ञान धारिये–गल्ती सुधारिये

⊡

पर्यावरण एवं स्वास्थ्य विज्ञान

जीवनदाता
पर्यावरण
रोग मिटाता
पर्यावरण
आरोग्य प्रदाता
पर्यावरण
सुखी बनाता
पर्यावरण

⊡

ग्रीष्मकाल में
धूप में चलने से
गर्म हवा के लगने से
लू किसे नहीं लगती?
लू लगकर ज्वर भी आता हो
चिन्ता न करे!
प्रकृति का वरदान
पर्यावरण औषधिदान–

स्वास्थ्य विज्ञान
है हमारे पास
जो न होने देता उदास, निराश, हताश
आश्वासन देता
धीरज सिखाता
औषधि भी बताता–सहज, सरल सफल
सिद्ध प्रयोग
जो आचार्य महावीर कीर्ति ने शिष्यों को–
बताये
"कल्याण का रकम्"
कारकम् औषधि शास्त्र में
उग्रादित्य आचार्य ने सिखाये–
इमली का पानी
गुड़ अथवा शक्कर में
मिलाकर पिलादो
अल्प समय में
लू उतर जाती है।
चेतना वेदना मुक्त हो जाती है
काया प्रकृति युक्त हो जाती है।
अथवा
प्याज का ताजा रस
शरीर पर मलने से
लू उतर जाती

प्रकृति साथ निभाती।
हरा आम को
आग मे सेककर, पकाकर
पानी में उबालकर
कच्चे आम रस में
शक्कर मिलाकर
पीने से
लू उतर जाती।
प्रकृति माँ ही स्वस्थ बनाती।
अथवा
धूप में पानी रखकर
गर्म होने पर
स्नान कराने से
लू उतर जाती, प्रकृति माँ ही असर
दिखाती।
तुलसी के पत्तों का क्वाथ/काढ़ा
सदा निभाता अपना साथ
तन में लाता खूब पसीना
ज्वर उतार कर जीवन जीना।

⊡

अनार के शर्बत की
महिमा निराली है।
समग्र परिवार में
लाता खुशहाली।।
हो ज्वर का रोगी
या हो सन्त, योगी
सबकी प्यास, बैचेनी
वमन, दस्त
मिटा देता अनार
अद्भुत है
प्रकृति माँ का उपकार

⊡

मन्दार की जड़ कहो
या कहो अकौआ की जड़
अथवा हो उसकी छाल
फिर देखो कमाल
उचित मात्रा सेवन करते
बुखार उतर जाता
पर्यावरण ही साथ निभाता।

⊡

अमलतास

अमलतास
है बढ़ा खास।
एक हाथ तक लम्बी
काली-काली फली
के बीज को पीसकर
मुनक्का, दूध में भिगोकर
पीने से मिलता आराम
बढ़ता ज्वर लेता विश्राम।
पर्यावरण है जिनके पास
मिल जायेगा अमलतास

⊡

कपास

ज्वर मे आराम
न मिलता हो।
जिस नाक में
तेज स्वर चलता हो
उसमें भरदो रूई अन्दर
ज्वर हो जाये छूमन्तर।।
प्रकृति का यह उपचार
करने हो जाओ तैयार।।

⊡

पिण्डखजूर

यदि हो जाये
कभी जुकाम
पर्यावरण का
लेना काम।
गर्म दूध में पिण्डखजूर
नमक डालकर पिओ जरूर।
मिट जायेगा, शीघ्र जुकाम
नहीं रुकेगा अपना काम।।
कायफल को पीसना
नासिका से सूंघना
मिट जाता है रोग जुकाम
पर्यावरण का ये वरदान

⊡

सौंठ में उबलाकर पानी
पी लेगा जो प्राणी।
मिट जायेगा शीघ्र जुकाम
प्रकृति माँ का ये वरदान

⊡

जलवायु परिवर्तन

जलवायु परिवर्तन
दीर्घकालीन प्रक्रिया
जो प्राकृतिक एवं
मानवीय कारकों द्‌वारा
प्रभावित होती
प्रभावित रखती
प्रभावित करती।

⊡

जलवायु परिवर्तन को
प्रभावित करने वाले
प्राकृतिक कारक हों
अथवा
मानवीय कारक
दोनों हैं
हानिकारक।
वायुमण्डल की अस्थिरता
जलवायु में अस्थिरता लाती।

प्राकृतिक कारकों की गति धीमी
किन्तु प्रभावशाली पायी जाती।
परिवर्तन, पल में दृष्टि गोचर नहीं होते।
किन्तु परिवर्तन रहित पल भी नहीं होते।।
वर्तमान जलवायु परिवर्तन
मानव जनित समस्या है।
यदि समस्या
मानव जनित है।
तो समाधान भी
मानव जनित होगा।

⊡

पर्यावरण अवनयन

भूमि उपयोग परिवर्तन,
औद्योगीकरण,
नगरीकरण
द्वारा
हो रहा जलवायु परिवर्तन,
तथा मानवीय दिनचर्या
मानवीय दैनिक क्रिया
द्वारा हो रहा
पर्यावरण अवनयन
मानवीय आर्थिक उद्देश्यों
की आपूर्ति हेतु
अथवा
भौतिक भोग-विलास की प्राप्ति हेतु
प्रकृति के साथ हो रहा, अनुचित-व्यवहार
कौन करे सुधार?
यह भी है
मानव का कर्तव्य पूर्ण अधिकार।।
पर्यावरण अवनयन ही

प्राकृतिक असंतुलन का
कारण बना है।
जलवायु परिवर्तन (क्लाइमेट चेन्ज) हो
अथवा हो
वैश्विक तापन (ग्लोबल वार्मिंग)
अथवा हो
बड़ता हुआ प्रदूषण
मानव जगत के समक्ष
समस्या बनकर खड़ा
समाधान चाहिए बड़ा।
तो समझो- कारण अनुरूप कार्य होता।
यदि कार्य दुष्कार्य हो तो
दुष्कारणों का अभाव
करना है अनिवार्य होता।।
यही कहते हैं आचार्य
उदाहरण से जानिए, मानिए
ईन्धन से आग जलती है।
यदि वही आग
अनावश्यक रूप से
अधिक जलने लगे तो
कुछ ईन्धन हटा देना ही
आग को घटा देना है।

⊡

जलवायु परिवर्तन में
मानव जनित कारण
संसाधनों का दुरुपयोग
नगरीयकरण एवं तीव्र औद्योगीकरण
जीवाश्म ईन्धन का प्रयोग
तथा निर्वनीकरण
वातावरण में CO_2 आदि GHGs के
उत्सर्जन में वृद्धि समताप मण्डल में
ओजोन क्षरण,
तापमान वृद्धि
एक कार्य में
अनेक कारण
करो अवधारण

⊡

जलवायु परिवर्तन का प्रभाव

जलवायु परिवर्तन का
मानव एवं पारितंत्र पर
पड़ रहा प्रभाव
बड़ रहा विभाव
इस तथ्य में सत्य क्या?
ग्लेशियर का पिघलना,
ध्रवीय वर्फ का खण्डित होना।
मानसून परिवर्तन
समुद्र में जल वृद्धि
बदलता पारिस्थितिक तंत्र
घातक ताप लहर
प्रकट कार्य
कारण के ज्ञापक हैं।
और भी अनेक उदाहरण हैं
मानवीय स्वास्थ्य प्रभाव
बड़ती बीमारी मलेरिया आदि।
कृषि एवं भोजन असुरक्षा तथा
आहार गुणवत्ता पर प्रभाव,

जल असुरक्षा
जल के लिए तनाव
पैदा हो रहा मन मुटाव।।

⊡

पर्यावरण
और
सदाचरण
रोगों का प्रशमन
कर देते हैं।
पर्यावरण संरक्षण
संवर्द्धन
संपोषण
स्वास्थ्य लाभ का
अभिनंदन है!
प्रदूषण तो
समस्या है
पर्यावरण रक्षण
तपस्या है।

⊡

पर्यावरण दान

पर्यावरण प्रदान करना
सृष्टि के प्राणि मात्र के,
औषधि लाभ देना है।
पर्यावरण
प्राकृतिक आरोग्य केन्द्र है।
पर्यावरण
स्वास्थ्य लाभालय है।
पर्यावरण में रहने से
मनशान्त, हल्का, स्फूर्त
उत्साह, ऊर्जावान
रहता। चिंतन सुखरील करता।
अतः पर्यावरण
दोसा ज्ञानदान
पर्यावरण जहाँ
जीव संरक्षण वहाँ
जीव रक्षण–अभयदान/आवासद
एक पेड़ पर
हजारों पंछी

अपना आवास
बना लेते हैं।
सुरक्षित
निर्भय
रैन बिता लेते हैं।
जब तक पेड़ फटता है
तो हजारो पंछीओं
घर उजड़ता है।
पेड़ लगाना
आवासदान देता है।
पर्यावरण से फल, फूल, पत्तों
पशु, पंछी, मानव के
उन ही के अंग बनते है
अतः पर्यावरण रक्षण की चमदानकर ही
स्वास्थ्य रक्षा
का विधान
पर्यावरण पर ध्यान
वानस्पतिक पर्यावरण से
प्राप्त औषधियाँ से
मानव जगत को
स्वस्थ्य बनाती हैं।

⊡

पर्यावरण आरोग्य शास्त्र है।
चिकित्सा करना
पाप नाशक
पुण्य प्रकाशक
सुख-शांति प्रसाधक है।
पर्यावरण में
जप तप
ज्ञान ध्यान है प्राकृतिक गई
भूत चतुष्य के
प्रकोप से
रोग नहीं होते हैं।
न दोषों से
रोग होते हैं।
वर्षफल खराब होने से
रोग नहीं होते हैं/
ग्रह, नक्षत्र अशुद्ध होने से
रोग नहीं होते हैं।
रोगों की उत्पत्ति
का अंतरंग कारण तो
पाप कर्मों का उदय

उदीरणा है।
सो कर्मोपशन की विधान
ही चिकित्सा का उपाय थी।
अपना पर्यावरण
करता रोग-शमन

⊡

पर्यावरण–प्राकृतिक चिकित्सा

माना
ज्वर रोग है
इसमें
पर्यावरण का क्या
उपयोग है–
तुलसी
कालीमिर्च
सोंठ
अजवायन को
गर्म पानी में उबाल की
काढा/क्वाथ
बनाकर
पिलाने मात्र से
ज्वर उतर जाता है।

⊡

हाँ–अडूसा के पत्ते का काढ़ा
अथवा
पंचांग पना
खांसी रोग
दर का रेला
अतिसार रोग में
बेलगिरी की चूर्ण
कब्ज में–हर्रड, बहेरा, आंवला
मिलकर बनता त्रिफला
खाने में कब्ज दूर होता है।

⊡

पर्यावरण बचाओ
रोगा भगाओ

पर्यावरण
स्वास्थ्य विज्ञान है।
पर्यावरण
आरोग्य मंदिर है।
पर्यावरण
औषधालय है।
पर्यावरण
सुरक्षालय है।
वात, पित्त, कफ
की समानता
आरोग्य है
विषमता रोग है।
स्वाभाविक रोग, आगुन्तुक रोग
मानसिक रो, कामिक रोग
ये चार प्रकार के रोग
पीड़ा पहुँचाते है।
स्वाभाविक रोग क्या?

भूख, प्यास, निद्रा,
इच्छा, वृद्धावस्था आदि...।
आगन्तुक रोग-
जन्मान्धता, चोर, मोच, दुर्घटना,
आदि..।
मानसिक रोग क्या?
स्वस्थमन
अस्वस्थ विचार
से उत्पन्न रोग- काम, कोध, लोभ
भय, मोह, दीनता,
अभिमान, शोक, खेद,
चुगली, ईर्ष्या, मात्सर्य
उन्माद, मृगी, मूर्च्छा, भ्रम आलस्य
अंहकार व्यसन आदि।
कायिक रोग- ज्वार सर्दी, जुकाम, पेट
दर्द, आदि।

⊡

वायु विज्ञान

मानव का मुख्य आहार वायु है।
प्रतिसमय वायु आहार होता है।
शुद्ध वायु रोग शमन करती
अशुद्ध वायु
रोग उत्पादन करती
वायु भगवान नहीं
किन्तु बलवान तो है।
वायु ही भोजन का
विभाग करती है।
पर्यावरण दता वायुयोग
उदान वायु-
गले में घूमती
शक्ति दायिनी
वायु प्रभाव से
वाणी में मधुरता,
शब्दों में कोमलता,
गीत, लालित्य, आता।
गाना गाता

यदि उदान वायु
कुपित हो जाये सो
गले की रोग उत्पन्न होता है।

⊡

प्राण वायु

प्राण वायु का स्थान
हृदय है।
प्राण धारण में कारण
यही प्राण वायु है
मुँह में चलती, भोजन अंदर ले जाती प्राण
रक्षक।
कुपित होतो
हिचकी,
श्वास रोग होता है।

⊡

सम्मन वायु

समान वायु
आमाशय
पक्वाशय में
विचरण करती हैं।
जठराग्नि/ उदराग्नि के
मध्यम से भोजन पचाती है।
मल-मूत्र को अलग अतंर करती है।
कुपित हो जावे तो
मन्दाग्नि, अतिसार
वायुगोला, रोग
उत्पन्न करती

⊡

अपान वायु

अपान वायु
पक्वाशय में रहती
मल-मूत्र, शुक्र
गर्भ,
आर्तव
इनको निकालकर
बाहर करती
इसी वायु के कुपित क्षेत्र पर
मूत्राशय एवं गुर्दा के रोग
पथरी आदि होते
शुक्र क्षेत्र, प्रमेह आदि

⊡

व्यान वायु

सम्पूर्ण
शरीर में
विचरती
यह वायु
पसीना को बहाती
खून का चलाती
रक्त संचार करती
जब कुपित होता है
तो शरीर रोगो को
प्रकट करती
पाँच वायु सम रहे तो
स्वस्थ विषम रहे तो अस्वस्थ
वायु-प्रकोप क्यों?
भो जीवनेच्छु।
वायु के प्रकोप से बचो
मल-मूत्र के वेगों को रोगो नहीं।
उचित समय, उचित स्थान पर
त्याग करो/

स्त्री संगति सेवंचो।
चटषक्ष, कडुवा, कषायला
रस प्रचुर भोज्य मत करो।

⊡